।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

वेदलक्षणा

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

जनवरी 2026

वर्ष : 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 10

हे मेरे प्रिय पुत्रों!

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

हे मेरे प्रिय पुत्रों! जो अपने मूल को भूल जाते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं, चाहे व्यक्ति हो, समाज हो या कोई राष्ट्र ही क्यों न हो। आप अपने को हिन्दू कहते हैं, तो बताओ हिन्दू की परिभाषा क्या है? अगर आप कहें कि वेदों को जो माने वह हिन्दू है, तो हिन्दुओं में बहुत से ऐसे वर्ग हैं जो वेदों को अपौरुषेय नहीं मानते– जैसे बौद्ध, जैन, सिख आदि। यदि वर्णाश्रम को मानने वाले को हिन्दू कहें तो भी यह सर्वांगपूर्ण व्याख्या नहीं, क्योंकि वर्णाश्रम को न मानने वाले भी हिन्दुओं में हैं। अगर आप कहें कि हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, सिन्धु से समुद्र तक इस हिन्दुस्थान को जो अपनी मातृभूमि–पितृभूमि माने वो हिन्दू है। यह तो ठीक ही है लेकिन जिनके पूर्वज यहाँ उत्पन्न हुए और जिनका शरीर इस भूमि के कणों से बना है, वे माने या न माने उनकी मातृभूमि–पितृभूमि यह भारतभूमि है ही, लेकिन जिनका जन्म किसी अन्य देश में हुआ तो क्या वह हिन्दू नहीं हो सकता?

हे मेरे प्रिय हिन्दुओं! फिर आपकी सर्वांग और पूर्ण परिभाषा क्या हुई? आप नहीं बता पाओगे, क्योंकि आप अपने मूल को भूलकर छोटे–छोटे चिन्ह धारण कर अपने को हिन्दू कहने लगे।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! जो गौ को माता माने वही हिन्दू है। जो गौ को उपयोगी पशु न मानकर उसमें पूज्य भाव–मातृभाव रखता हो वो हिन्दू है।

गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणवे च दृढ़ा मतिः। पुनर्जन्मनि विश्वासः स वै हिन्दुरिति स्मृतः।।

अर्थात–गोमाता में जिसकी भक्ति हो, प्रणव जिसका पूज्य मन्त्र हो, पुनर्जन्म में जिसका विश्वास हो–वही हिन्दू है। हिन्दू संस्कृति का प्रमुख प्रतीक हैं– गौ में मातृभाव। अन्य धर्मावलम्बी गौ को उपयोगी मान सकते हैं, सेवा कर सकते हैं, मगर माँ नहीं मानते, गो को माँ तो केवल हिन्दू ही मान सकता है। आप भी अगर गाय को एक दूध देने वाला उपयोगी पशु मानते हो तो आप हिन्दू नहीं हो सकते।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! इसलिये हिन्दू शास्त्रों में गौ की अनन्त महिमा है। वेदों में, पुराणों में, इतिहास में–जहाँ भी देखिये, गौ से बढ़कर कोई द्रव्य नहीं है, क्यों? क्योंकि हिन्दू का मूल ही गौ है। गौ नहीं तो हिन्दू का कोई अस्तित्व नहीं। जो गो से किनारा करके अपने को हिंदू कहते हैं उनको चिंतन की आवश्यकता है।

आपकी अपनी प्यारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक: 10

पौष मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 जनवरी-2026

1. **प्रार्थना क्या है** - परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 04
2. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** - परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 07
3. **ठाकुरजी कब आओगे** - भगवत प्रेरणा से 10
4. **माँ** - परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज 13
5. **श्रीमदभागवत कथा** - पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 16
6. **भविष्य पुराण में गोमहिमा** - संकलित 19
7. **गाय से कामनापूर्ति के सिद्ध प्रयोग** - साभार 'गवार्चनप्रयोग' 20
8. **श्री राम कथा** - पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 22
9. **श्री शिव महापुराण कथा** - पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 25
10. **परमपद (जीव का अपना असली घर)** - साभार 'साधक संजीवनी' 28
11. **जाऊँ तो जाऊँ कहाँ** - सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 30
12. **संस्था समाचार** - दिसम्बर माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क-2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है?

पिछले अंक से आगे.......

बहुत कम भाई-बहन ऐसे हैं जो सचमुच यह जानते हैं कि हमारी वास्तविक आवश्यकता क्या है? वास्तविक आवश्यकता जानने वाले बहुत कम भाई-बहन है। ''मनुष्यानां सहस्त्रेषु''- हजारों मनुष्य में कोई एक अपनी वास्तविक आवश्यकता का अनुभव करता है। इसलिए प्रार्थना की बात है। बहुत से लोग तो मन में उत्पन्न हुई कामनाओं को ही अपनी आवश्यकता समझते हैं। कामनाएं अलग हैं, आवश्यकताएं अलग हैं। कामनाओं में प्रवृत्ति होती है पर प्राप्ति नहीं होती है, उनकी निवृत्ति होती है जबकि आवश्यकता की पूर्ति होती है, आवश्यकता की निवृत्ति नहीं होती है। कामना की निवृति होती है और आवश्यकता की पूर्ति होती है, यह आवश्यकता और कामना में अंतर है।

कामना हमारा संबंध उत्पन्न और विनाशशील वस्तुओं से जोड़ती है। उत्पन्न और विनाशशील वस्तुओं से संबंध जोड़ने पर भय और चिंता उत्पन्न होती है, क्योंकि सभी उत्पन्न और विनाशशील वस्तुएं, अवस्थाएं, परिस्थितियों मिलती है और बिछुड़ जाती है। उनके संबंध से भय और चिंता उत्पन्न होती है। आवश्यकता हमारा संबंध अनुत्पन्न हुए तत्व से जोड़ती है जिनसे संबंध जोड़ने से भय और चिंता समाप्त हो जाती है। यह आवश्यकता और कामना में अंतर है। सज्जनों आप विचार करो जरा गंभीरता से विचार करो कामनाओं का उद्गम स्थान तो देहाभिमान है। मैं शरीर हूँ ऐसा देहाभिमान ही- मुझे मान चाहिए, धन चाहिए, सुविधा चाहिए, सुख चाहिए, कीर्ति चाहिए, ऐसी कामनाओं का जनक है। इसी से फिर मैं देह हूँ तो मुझे सुविधा भी चाहिए, सामान भी चाहिए, घर भी चाहिए, कुटिया भी चाहिए, मकान भी चाहिए, भोजन भी चाहिए। सारी कामनाओं की उत्पत्ति का मूल कारण देहाभियान है और देहाभियान अविवेक सिद्ध है।

वास्तव में मैं शरीर हूँ ही नहीं। यह विवेक का आदर न करने से अपने को हम शरीर मानते हैं। अगर विवेक के प्रकाश में देखा जाए तो शरीर अलग है और हम अलग हैं। शरीर बदलता है हम नहीं बदलते हैं। शरीर पहले नहीं था हम पहले भी थे। शरीर बाद में नहीं रहेगा, हम बाद में भी रहेंगे। तो शरीर और हम दोनों अलग-अलग हैं यह विवेक सिद्ध बात है, पर इस विवेक का आदर न करने वाले प्राणी अपने को ही शरीर मानते हैं। ऐसे शरीर को मैं मानने के कारण ही कामनाओं की उत्पत्ति होती है। यह अविवेक सिद्ध कामनाओं से, अविवेक के द्वारा उत्पन्न हुई कामनाओं से उत्पन्न जो असत् है उसे हम अपनी आवश्यकता नहीं कह सकते अपितु एक दशा विशेष कह सकते हैं।

कामना आवश्यकता नहीं है वह एक दशा, एक परिस्थिति है। कामना हमारी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि कामना का उद्गम स्थान 'यह' है 'मैं' नहीं। 'यह' मानि शरीर और 'मैं' मानि आत्मा। आत्मा से कामना की उत्पत्ति नहीं है शरीर से कामना की उत्पत्ति है। आत्मा में तो शांत जीवन, स्वाधीन जीवन और रसमय जीवन की आवश्यकता है, मांग है। आत्मा की मांग यह है कि आत्मा शांत, अमर, अविनाशी, स्वाधीन और रसरूप जीवन चाहता है और शरीर सुविधा, सम्मान, सामग्री, आदि चाहता है, आदि की शरीर को कामना है। आप सोचें, अभी हम

आपसे पूछें कि शरीर से अलग होकर आप क्या चाहते हो? कोई भी भाई-बहन, सज्जन, साधु यह बताएं कि शरीर से अलग होकर हमें क्या चाहिए? तो उत्तर होगा-कुछ नहीं चाहिए। आप कोई भी कामना नहीं बता सकते जो शरीर के न होने पर आपको चाहिये। शरीर के बिना आपको न घर चाहिए, न मकान चाहिए, न कुटिया चाहिए, न भोजन चाहिए। शरीर अगर नहीं है तो क्या चाहिये? कुछ नहीं चाहिए। ना कपड़ा चाहिए, न लता चाहिए, न भोजन चाहिये, कुछ नहीं चाहिए। शरीर अगर नहीं है तो कुछ नहीं चाहिए, कुछ नहीं चाहिए।

तात्पर्य क्या निकला? कामना कब उत्पन्न होती है जब हम अपने को शरीर मान लेते हैं। अब आप विचार करो कि अपने को शरीर मान लेना, यह कोई समझदारी है? यह विवेक का आदर नहीं है। भगवान ने गीताजी का शुभारंभ होते ही बताया कि सत और असत को अलग-अलग समझना विवेक है। शरीर और शरीरी को अलग-अलग समझना विवेक है। शरीर उत्पन्न और नष्ट होने वाला है और शरीरी (आत्मा) अनुत्पन्न और नष्ट न होने वाली अविनाशी है, इस बात को समझना विवेक है।

तो हम अगर शरीर को ही मैं मानते हैं, आत्मा और शरीर दोनों को एक मानते हैं तो इसका नाम अविवेक है। तो भाई यह अविवेक पशुता है, मनुष्यता नहीं है। जो शरीर और आत्मा को एक मानता है उनकी संज्ञा मनुष्य नहीं हो सकती, वह मनुष्यता नहीं है, उसकी संज्ञा पशुता है। जो शरीर और आत्मा को एक मानता है उनकी संज्ञा मनुष्य नहीं हो सकती भले ही आकार में मनुष्य हो, पर वह मानव नहीं हो सकता, वह मानव नहीं हो सकता। क्यों? क्योंकि मानव उसे कहते हैं जो अपने ज्ञान का आदर करे, अपने ज्ञान और अपने जीवन में एकता होने का नाम मानव है। जिसके जीवन में कथनी और करनी में अंतर है तो वह मानव नहीं है। जो ज्ञान है वह कथनी है और उसका जीवन है वह करनी है। मतलब जिसके ज्ञान और जीवन में एकता है वही सच्चा मानव है। उसी को हम साधु कह सकते हैं, उसी को हम साधक कह सकते हैं, उसी को हम सज्जन कह सकते हैं और अगर उसको हम हिन्दू कह दें, उसको हम हिंदू कह सकते हैं तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में हिंदू वही है जो शरीर और शरीरी को भिन्न-भिन्न जानता है, क्योंकि यह हिंदुओं का दर्शन है। हिंदू दर्शन यही है कि सत और असत दोनों भिन्न है। दोनों कभी मिल नहीं सकते। सत का कभी अभाव नहीं होता और असत का कभी भाव नहीं होता। नासतो विद्यते भावो, ना भावो विद्यते सत। असत कभी टिक नहीं सकता और सत कभी मिट नहीं सकता। यह हिंदू दर्शन है और इस दर्शन को जीवन में उतारने वाला हिंदू है।

तो भाई यह तो चलो थोड़ी और आगे बात चली गई पर यह मानना पड़ेगा कि जो अपने विवेक का आदर नहीं करता है वह मानव नहीं हो सकता है। शरीर को ही मैं मानने वाला पशु है, आपको मानना पड़ेगा वह अवश्य है। क्योंकि जिसको 'यह' कह करके संबोधन करते हैं उसको 'मैं' नहीं कह सकते। इदम् शरीरं कौन्तेय- तो 'यह' कहने वाला 'मैं' शरीर से अलग होता है। 'यह' को 'मैं' नहीं कह सकते और 'मैं' को 'यह' नहीं कह सकते। जैसे आप कहो कि यह मेरा मकान है, तो कम से कम यह तो आप जानते हो कि मैं मकान नहीं हूँ। ऐसे जब आप कहते हो कि यह मेरा शरीर है तो यह बात भी आप जानते हैं कि आप शरीर नहीं हो। आप यह बताइए आप अपने ज्ञान के अनुसार अपने को शरीर नहीं मान सकते। आपको मानना ही होगा कि शरीर हमसे अलग है। जो चीज जानने में आती है, वह जानने वाले से अलग होती है, जो चीज देखने में आती है वह देखने वाले से अलग होती है। हाँ इतना ही नहीं जिन साधनों से हम देखते हैं, सुनते हैं, सोचते हैं, वे

साधन भी हमसे अलग हैं- जैसे आँखों से देखते हैं, बुद्धि से जानते हैं, मन से सोचते हैं, कानों से सुनते हैं तो ये आँखें, कान, मन और बुद्धि भी हमसे अलग हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि भाई शरीर, इंद्रियाँ, मन, बुद्धि, प्राण आदि जितनी वस्तुएं हैं उनको 'मैं' नहीं कह सकते हैं, वे सब 'यह' हैं। यह हमको ज्ञान तो है पर हमको इस ज्ञान का आदर करना है। हमको दिखता तो है कि शरीर बदलता है, हम नहीं बदलते, मन कभी अच्छा होता है, कभी बुरा होता है। हम तो वही के वही रहते हैं। मन खराब होता है तब भी हम वही होते हैं, मन अच्छा होता है तब भी हम वही रहते हैं। कभी कहते हैं कि आज तो बुद्धि ठीक नहीं है, तो बुद्धि ठीक नहीं होती है तब भी हम तो वही होते हैं और बुद्धि अच्छी होती है तब भी हम वही होते हैं। सुनते हैं तब भी हम वही होते हैं, नहीं सुनते तब भी हम वही होते हैं ।

तो शरीर, इंद्रियाँ, मन, बुद्धि ये हमसे अलग हैं, यह ज्ञान हमको है यह जानकारी हमको है। इस जानकारी का आदर करना है, इस जानकारी को स्वीकार करना है बस इतना सा काम है। आप कहेंगे कि इन्हें 'मैं' तो नहीं कह सकते किन्तु 'मेरा' तो कह सकते हैं? भाई शरीर को 'मैं' नहीं कह सकते, मन को, बुद्धि को, इंद्रियाँ को, प्राण को 'मैं' नहीं कह सकते पर बुद्धि मेरी है, मन मेरा है, इंद्रियाँ मेरी है ऐसा तो कह सकते हैं? तो कहना होगा कि जैसे ड्राईवर किसी की मोटर को मेरी मोटर कह देता है, उसी प्रकार बोलचाल की भाषा में हम भले ही कहें कि शरीर मेरा है। ड्राईवर जो होता है उसकी मोटर होती नहीं है, पर वह ड्राईवर है इसलिए व्यवहार के लिए वह रोड़ पर गाड़ी खड़ी है और कोई पूछे कि गाड़ी किसकी है तो वह कहता है गाड़ी मेरी है, भले ही गाड़ी उसके मालिक की है। वह ड्राईवर के पास में है और वह गाड़ी से कुछ गड़बड़ करेगा तो उसका दंड भी ड्राईवर को ही भोगना पड़ेगा। ऐसे ही हम भले कह दें कि शरीर मेरा है, पर वास्तव में शरीर का मालिक तो कोई और है। हाथ मेरा है, शरीर मेरा है पर भाई सोचो तो सही क्या शरीर का और संसार का कोई विभाजन कर सकता है? शरीर और संसार दोनों को अलग कर सकते हैं क्या? आपको मानना पड़ेगा कि नहीं कर सकते। यह शरीर आपका नहीं, जिस प्रकार संसार रूपी सागर की, यह शरीर एक लहर है वह भी आपका नहीं है। इसमें आपके विवेक का विरोध है।

तो कहना होगा कि शरीर हमारा है ही नहीं किन्तु उसके उपयोग मात्रा में हमारा अधिकार है। जैसे गाड़ी ड्राईवर की ना होते हुए भी उसे उस गाड़ी का, जिस काम के लिए उसे दी है उस कार्य हेतु उपयोग करने मात्र का अधिकार है, ऐसे ही शरीर हमारा नहीं है पर शरीर हमें मिला है तो जिस काम के लिए मिला है उसमें शरीर का उपयोग करना ही हमारा दायित्व है। तो जिसने हमें शरीर के उपयोग का अधिकार दिया, उसने हमारी ईमानदारी पर विश्वास किया है। जैसे कोई गाड़ी ड्राईवर को सौंपता है तो ड्राईवर पर विश्वास करता है तभी तो सौंपता है। नहीं तो वह लेकर भाग जाए, कहीं-कहीं क्या करेगा, डीजल निकाल देगा, कोई अच्छा महंगा सामान अंदर से निकाल देगा। ऐसे बहुत सारे किसान अपना ट्रैक्टर हाली को देते ही नहीं, गोशाला में तो क्या करें देने पड़ते हैं।

तो भाई भगवान ने हमको शरीर दिया है और हम पर विश्वास किया है कि हम इस शरीर का सदुपयोग करेंगे। केवल शरीर दिया इतना नहीं है शरीर के उपयोग करने का विवेक भी साथ में दिया है। तात्पर्य क्या निकला? मिली हुई कोई भी वस्तु हमारी नहीं है और न कोई भी वस्तु हम हैं, अपितु दी हुई वस्तु के उपयोग करने में ही हमारा अधिकार है। इसी को ही कर्तव्यनिष्ठ प्राणी कर्तव्य के नाम से कहते हैं, धर्मात्मा इसे धर्म के नाम से कहते हैं। ..शेष अगले अंक में

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

समाज और राष्ट्र की भलाई का सर्वोत्तम साधन गोसेवा है

पिछले अंक से आगे..........

पूरे गोवंश की रक्षा करना ऐसे संभव नहीं है जब तक भारत गणराज्य गो के पक्ष में कानून नहीं बनाता और गो के अधिकारों की रक्षा नहीं करता।

पहाड़, वन, अरण्य, आगोर, गोचर ये सब गो भूमियाँ हैं और गोमाता के लिए ही वैदिक काल से आरक्षित थी जिसे मुगल, तुर्क, पठान और अंग्रेज भी नष्ट नहीं कर पाए उन गो भूमियों को स्वाधीन भारत के बेसमझ शासकों ने बड़ी भारी मात्रा में नष्ट किया, उस पर अतिक्रमण किये। गो भूमियों पर अतिक्रमण करने वाला व्यक्ति हो, परिवार हो, राजा हो या प्रजा हो महान अपराधी है। चंडाल का मांस भी उनकी दृष्टि पड़ने से अशुद्ध हो जाता है जो गोचर भूमियों पर अधिकार जमाता है, अतिक्रमण करता है। दुर्भाग्य से देश के अनेक राज्यों में सबसे पहले शासन द्वारा गोचरों पर अतिक्रमण हुए हैं और फिर प्रजा द्वारा भी किया गया।

सज्जनों! पाप से डरना धरती वासियों ने लगभग बंद कर दिया है। पाप से नहीं डरते, ईश्वर से नहीं डरते, समाज से नहीं डरते और कानून से भी नहीं डरते हैं तो किससे डरते हैं? केवल मरने से डरते हैं और आज तो यह स्थिति भी पैदा हो गई है कि अशुद्ध आहार के शिकार होकर लोग मृत्यु के मुख में जा रहे हैं उनकी रोग निरोधक शक्ति समाप्त हो रही है। कोरोना जैसे संक्रमण सारी दुनिया को भयभीत कर देते हैं। ऐसे संक्रमण तो अनादिकाल से बनते और बिगड़ते हैं, लेकिन पहले लोगों की रोग निरोधक क्षमता थी वह शुद्ध आहार के कारण, शुद्ध हवा एवं जल के कारण अधिक थी इसलिये वे संक्रमण उनको संक्रमित नहीं कर पाते थे। आज लोग कमजोर हो गए हैं। आहार, अन्न, जल आदि विषैले होने के कारण मनुष्यों की रोग निरोधक क्षमता समाप्त प्रायः हो गई है इस कारण छोटा सा विषाणु, बाल के हजारवें भाग से भी छोटा विषाणु जिससे दुनिया डर गई।

इतना विज्ञान, इतने अस्त्र-शस्त्र, एक से एक बढ़कर आधुनिक चिकित्सा के साधन आदि सब फेल और बोले कि घरों में बैठो, घर बंद करो, घरों से बाहर मत निकलो और मुंह ढक दो, एक दूसरे से दूर रहो ऐसा प्रचार शुरू किया। यह आचार का प्रचार तो संत करते हैं, गुरु करते हैं, शास्त्र करते हैं, आपको क्यों करना पड़ा। आप तो कहते थे कि हम अपनी बुद्धि से प्रकृति पर शासन स्थापित कर लेंगे, प्रकृति के विरोध चलकर प्रकृति को अधीन कर लेंगे और ऐसी आपने चेष्टाएं भी की उसी का दुष्परिणाम इस तरह के विषाणुओं का उत्पन्न होना और उनको भयभीत करना है।

मनुष्य जाति अगर मनुष्य से कमजोर प्राणियों को भयभीत करेगी, दुःख देगी, उनके अधिकारों का अपहरण करेगी, उन्हें सुखपूर्वक जीने नहीं देगी तो मनुष्य भी सुखपूर्वक नहीं जी सकता। गोमाता जो सारे प्राणियों की माँ है, सारे विश्व की माँ है, मूक सृष्टि और मानव के बीच में एक सेतु है, भगवान की भी प्यारी है, उसको भी कत्ल कर खाने लग गये। हमारे श्री जंगम भैया अभी भगवान गोपाल के भजन गा रहे थे रामकृष्ण आदि भी गोमाता के लिए ही अवतरित होते हैं, गो के आह्वान से धरती पर वर्षा

होती है धरती, जल के अंदर गोमाता के आसरे पर टिकी हुई है, सारी प्रकृति की मर्यादा की धुरी गाय है उस गाय पर भी आज का मानव आघात कर रहा है तो बाकी प्राणियों का तो कहना ही क्या।

कितना भयंकर पाप हुआ है और यह पाप प्राकृतिक प्रकोपों के रूप में तो आ ही रहा है, पर मानव स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने के लिये एक विकराल रूप ले सकता है, मनुष्य के जीवन को नरक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा अगर मनुष्य इन पापों को छोड़ेगा नहीं तो। ऐसी स्थिति भविष्य में आती हुई दिख रही है। अभी भी अगर मानव जाति नहीं चेती, वह गोहत्या के पाप से अपने नहीं बचाता है, उसने अन्न को शुद्ध नहीं किया, हवा को शुद्ध नहीं किया, जल को शुद्ध नहीं किया तो भविष्य नरकमय है।

केवल गाय ही ऐसा प्राणी है जो धरती को सात्विक उर्वरा शक्ति से सम्पन्न कर सकता है, वायु को शुद्ध सात्विक ऑक्सीजन से (जीवनी शक्ति से) भर सकता है, जल को मल रहित, पवित्र और रसमय बना सकता है। यह शक्ति केवल वेद लक्षणा गोमाता में है। हमने आरम्भ से ही कहा कि धोखा मत खा जाना। गाय केवल गाय को ही कहते है। बिना थुंभी (कुकुद) और बिना गल कंबल वाला पशु गाय नहीं है। वह पशु है, प्राणी है, जीव है। सभी जीव रक्षण्य है इसलिए उनकी भी रक्षा हो, जिनके हृदय में जीव दया है वो करे, करना ही चाहिये, सभी प्राणियों को जीने का अधिकार है, पर गोमाता तो भाइयों पूज्य है, पूज्य भाव से वह पालनीय और सेव्य है। गाय का पालन दया भाव से नहीं करना है, दया तो गाय के अंदर है इसलिये इतने दु:ख सहन करके भी धरती पर खड़ी है हमारे लिए। अगर यह हट गई तो धरती जल में उसी समय डूब जाएगी।

गाय धरती का प्राणी नहीं है, गाय गोलक का प्राणी। इसीलिए उनके मल में भी सात्विकता है, उनके मूत्र में भी सात्विकता है। बताओ दुनिया का कोई ऐसा प्राणी, कोई गुरु, कोई संत, कोई सिद्ध, कोई ऐसा पीर पैगंबर या अवतार सुना है जिसका मल और मूत्र पवित्र हो? गाय का मल और मूत्र पवित्र है इसलिए गाय सबसे श्रेष्ठ है और इन सबकी आराध या है, सबकी उपास्या है, सब उनके उपासक हैं, भगवान भी, संत भी और गुरु भी।

इसलिये गो की इतनी महिमा है। आप तो गोमहिमा को सब जानते हैं। वैसे हम लोगों का कर्तव्य है कि हम अपनी वाणी को शुद्ध करें और दूसरों के करण और अंत:करण को इस वाणी से आलापति करें इसलिये समय की सार्थकता के लिये गोमहिमा की बात कर रहे हैं कि आज गोवंश के संरक्षण के साथ-साथ में उनके आश्रय और आहार का प्रबंध भी आवश्यक हो गया। गाय निराश्रित हो गई। बिना दूध वाले बछड़े-गाएं आपको सड़कों पर भारत में घूमते हुए मिलेंगे। आधे भारत में तो हाथों-हाथ कसाई ले जाते हैं और आधे भारत में गाय के प्रति आस्था रखने वाले लोग हैं, इसलिये उनके भय से कसाई उन्हें इस प्रकार सीधा उठाकर तो नहीं ले जाते लेकिन चोरी छिपे इन राज्यों से भी बड़ी संख्या में गो तस्करी हो रही है।

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश गुजरात और उत्तर प्रदेश, इन राज्यों में आप देखेंगे तो सड़कों पर घूमते हुए बछड़े गाएं बड़ी संख्या में दिखेंगे। भूखे-प्यासे, कचरे के ढ़ेर पर खड़े हैं, कचरा खा रहे हैं, प्लास्टिक खा रहे हैं। उनके रहने को कोई स्थान नहीं है, खाने को भोजन नहीं है, पीने को पानी नहीं है। पूछो तो कहेंगे कि पता नहीं आवारा है। अरे आवारा तो तुम हो इसलिए तुमने गोमाता को घरों से बाहर निकाला है, गोमाता के अधिकारों का अपहरण किया है। गाएं तो धरती का प्राण है। गाएं प्रकृति की धुरी है। गाय के बिना न तो यह प्रकृति ठीक तरह से रह सकती है और ना ही धरती जीवित रह सकती है। उसका तो घर धरती है और आपने धरती को दबा

दिया। सर्वे भूमि गोपाल की। सारी भूमि गोपाल की है, गोपालन के लिये है। जो गोपालन नहीं करता है और धरती पर कब्जा करता है वह आतताई है, अतिक्रमी है, अपराधी है। प्रकृति उसे दंड देती है, उनके वंश को, समाज और राष्ट्र को प्रकृति दण्ड देती है जो गो के अधिकारों का अपहरण करते हैं।

सज्जनों भारत से भी गो अपराध बना है। हमारे देश को गो अपराधों से मुक्त करना है और उसके सिर पर लगा हुआ गो हत्या का कलंक मिटाना है। इसके लिए हम सबको आने वाली पीढ़ी को भी सुरक्षित रखना है जैसे हमारे पूर्वजों ने हमको धरती शुद्ध दी, हवा शुद्ध दी, जल पवित्र दिया, सड़कें नहीं दी, मकान भी नहीं दिए होंगे, गाड़ियों भी नहीं दी होगी, पर सज्जनों इन सबके बिना चल सकता है लेकिन हवा के बिना, जल के बिना, अन्न के बिना जीवन नहीं रह सकता है। तो उन्होंने हमें जीवन दिया और हम आने वाली पीढ़ी को मौत ही मौत दे रहे हैं, जल में, अन्न में, हवा में, सड़क पर भी मरो, ऊपर भी मरो, मारने के बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्र दिये, भोजन करो तो मरो, जल पीओ तो भी मरो, सांस लेकर भी मरो। मरना, मरना और मरना। मृत्यु ही मृत्यु दी, जीवन दिया ही नहीं। क्या कहेगी और कैसे जिएगी आने वाली पीढ़ी, नरक बन जाएगा उनका जीवन। मरेंगे नहीं पर अनेक रोगों से ग्रस्त हो जायंगे।

इसलिए सज्जनों हमारा कर्तव्य है कि हमारी भूल से जो पृथ्वी पर, जल में, वायु में जो दोष फैला है, विष फैला है उसका शमन और समाधान हम ही करें और उसका उपाय है गोमाता। गाय माता के घी से धूप, दीप, हवन आदि करने से वायु शुद्ध सात्विक शक्ति से सम्पन्न होती है। गायों के लिए बड़े-बड़े जलाशय और नदियों खोल देने से वह उनके खुर के स्पर्श से, उसमें जल पीने से और उसमें गोमूत्र छोड़ने से जल भी शुद्ध पवित्र और रसमय हो जाता है। धरती को गाय का गोमय देने से धरती का अन्न हमें आरोग्य देने वाला हो जाता है। यह रास्ते हैं इसके लिए हमको दो उपाय करने होंगे- स्वयं को गोव्रती बनना होगा और गोमाता के आश्रय और संपोषण के लिए उपार्जन करना होगा। गोवंश की सुरक्षा, संपोषण और आश्रय ये तीन इसके लिए ये तीन प्रबंध होने पर ही जो बीज रूप से गोवंश रहा है वो सुरक्षित होगा, इसकी वृद्धि होगी और उससे हमारे देश को और आने वाले पीढ़ी को लाभ मिलेगा।

गौओं की सेवा से गुरुओं को प्रसन्नता होगी, संतों को प्रसन्नता होगी, भक्तों को प्रसन्नता होगी, हमारे पूर्वजों को भी प्रसन्नता होगी कि वाह! हमारी संतान प्रकृति की भी माँ गोमाता की सेवा में लग गई है। परमात्मा को प्रसन्न करने का भी सर्वोत्तम साधन गोसेवा है। समाज और राष्ट्र की भलाई का भी सबसे बड़ा साधन गोसेवा है। प्रकृति के संवर्धन, धरती के पोषण और मानव में संस्कृति की समाराधना तथा पर्यावरण की शुद्धि का स्त्रोत भी वेदलक्षणा गोमाता ही है।

अतः सब प्रकार से गो संरक्षण्य ही है सेवन्य है, पालन्य है और पूजनीय है। जो मनुष्य अपना सब तरह से अभ्युदय चाहते हैं लोक और परलोक में वे गोमाता की सेवा में लग जाए। लोक में आरोग्य, संतति, कीर्ति, यश, यश, श्री समृद्धि और परलोक में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, मुक्ति, प्रीति गोमाता से प्राप्त होते हैं।

अतः परमात्मा से प्रार्थना है कि हम सबको गोमाता की महिमा समझने का और उनकी सेवा का अवसर प्रदान करें। हमारा सामर्थ्य गोसेवा के लिए लगे, बढ़े और परमात्मा की प्रति हमारे हृदय में प्रकट हो इसी सद्भावना के साथ में यहाँ पर बिराजे हुए संतो को, साधकों को, सद्गृहस्थों को, माताओं, बहनों, बालकों सभी को एक बार पुनः सादर सप्रेम हरि स्मरण। जय गोमाता, जय गोपाल।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.........

इसलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि चित्रकूट की कहानी ही राम की कहानी है। रामायण के अनुसार भगवान राम ने वाल्मिकी जी से पूछा था कि ऐसा कोई स्थल बताएं जहाँ मैं अपने भाई लक्ष्मण और सीता सहित वनवास का समय व्यतीत कर सकूं और हमारे निवास से किसी मुनि को भी कोई कष्ट न हो तो महर्षि ने उन्हें चित्रकूट में रहने का आदेश दिया था। इस बात को रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस चौपाई के माध्यम से कहा है-

चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।।
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू।।

आप चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिए, वहाँ आपके लिए सब प्रकार की सुविधाएं हैं। सुहावना पर्वत है और सुंदर वन है। वह हाथी, सिंह, हिरन और पक्षियों का विहार स्थल है।

नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रिप्रिया निज तप बल आनी।।
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि।।

वहाँ पवित्र नदी है, जिसकी पुराणों ने प्रशंसा की है और जिसको अत्रि ऋषि की पत्नी अनसुयाजी अपने तपोबल से लाई थीं। वह गंगाजी की धारा है, उसका मंदाकिनी नाम है। वह सब पाप रूपी बालकों को खा डालने के लिए डाकिनी (डायन) रूप है।

अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं।।
चलहु सफल श्रम सब कर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू।।

अत्रि आदि बहुत से श्रेष्ठ मुनि वहाँ निवास करते हैं, जो योग, जप और तप करते हुए शरीर को कसते हैं। हे रामजी! चलिए, सबके परिश्रम को सफल कीजिए और पर्वत श्रेष्ठ चित्रकूट को भी गौरव दीजिए। महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें यही राय दी और मत्यगयेन्द्रनाथ की आराधना के बाद भगवान राम चित्रकूट के निवासी बन गए। कामदगिरि की महिमा का वर्णन करते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि -

कामदगिरि भे राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत विषादा।।

अर्थात कामदगिरि स्वयं राम के प्रसाद बन गए और उनके दर्शन मात्र से ही विषाद तिरोहित हो जाते हैं। इतना ही नहीं-

चित्रकूट चिंतामनि चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।

चित्रकूट मनोकामनाएं पूरी करने वाला एक सुन्दर रत्न है जो सभी सांसारिक (भव) और पारिवारिक (रुज परिवार) रोगों का नाश करने वाला है।

चित्रकूट के विहग मृग, तृण अरु जाति सुजाति।
धन्य धन्य सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति।।

चित्रकूट के पक्षी, पशु, बेल, वृक्ष, तृण-अंकुरादि की सभी जातियाँ पुण्य की राशि हैं और धन्य हैं- देवता दिन-रात ऐसा कहते हैं।

राम के विरह से व्यथित भ्राता भरत का मिलन इसी चित्रकूट में होता है। यह चित्रकूट साक्षी है मानव के आचरण की उस पराकाष्ठा का जहाँ लोभ, मोह और किसी तरह की ईर्ष्या हृदय को प्रभावित ही नहीं करती। भरत अयोध्या के राजतिलक की तैयारी करके चित्रकूट आए थे और भगवान राम को सम्राट घोषित करने पर आमादा थे। किन्तु सत्ता यहाँ फुटबाल बन गई। राज सत्ता को एक लात भरत की पड़ती तो राम की ओर दौड़ती और राम के प्रहार से भरत की ओर आती। अंततः सिंहासन पर आसीन हुई राम चरण पादुकाएं।

देवत्व के अभिमान को दंडित करने वाला इसी चित्रकूट का स्फटिक शिला क्षेत्र है। पौराणिक प्रसंग के अनुसार -

एक बार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूषन राम बनाए'।।
सीतहि पहिराए प्रभु नागर। बैठे फटिक शिला परमादर।।

एक बार सुंदर फूल चुनकर श्री रामजी ने

अपने हाथों से भाँति-भाँति के गहने बनाए और सुंदर स्फटिक शिला पर बैठे हुए प्रभु ने आदर के साथ वे गहने श्री सीताजी को पहनाए।

वास्तव में यह दृश्य सौंदर्य को आदर देने का था। परन्तु इंद्र का पुत्र जयंत अपने घमंड में कौवे का रूप धरकर आया और माता सीता के पैर में चोंच मार कर चला गया। श्री राम इससे क्रोधित हो जाते हैं और जयंत के पीछे सींक बाण चला देते हैं। आखिरकार यह सींक का बाण तब शांत हुआ जब उसने शरण में आए हुए जयंत की एक आंख का हरण कर लिया।

चित्रकूट में यदि ऋषि थे तो निशाचरों की संख्या भी कम नहीं थी। विराध जैसे अनेक राक्षसों के वध के प्रसंग रामायण में है। चित्रकूट ही वह स्थल है जो भगवान राम की प्रतिज्ञा का केंद्र बना। जब शरभंग ऋषि ने उन्हीं के सामने स्वयं की काया अग्नि को समर्पित कर दी और राम आगे बढ़े तो आज के सिद्धा पहाड़ में उन्हें हड्डियों का ढ़ेर दिखा। उन्होंने पूछा तो पता चला कि निशाचरों ने मानवों को खाकर यह ढ़ेर लगाया है। उन्होंने यहीं संकल्प लिया-

निसिचर हीन करौं महिं, भुज उठाइ प्रन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रम जाइ जाइ सुख दीन्ह।।

भगवान राम इसी चित्रकूट अंचल में सुतीक्ष्ण से मिलते हैं और अंत में अगस्त्य से। रामकथा के अनुसार अनेक अस्त्र-शस्त्र उन्हें अगस्त्य मुनि ने ही सौंपे थे। जिनमें वह बाण भी शामिल था जिससे रावण का वध किया गया।

कहते हैं कि तुलसीदास जी से मिलने कभी यहाँ मीरा बाई का आगमन हुआ था, और गोस्वामी जी ने ही उन्हें रैदास के पास भेजा था। यहाँ रहीम का रमना उनके साहित्य में ही वर्णित है।

ऐसा चित्रकूट का इतिहास और इस धाम की महिमा है। इस परम पवित्र धरा पर परम श्रद्धेय महाराजश्री ने कुछ माह विराजकर साधना की।

चातुर्मास व्यतीत होने के पश्चात चित्रकूट से कोई अज्ञात शक्ति महाराजश्री को महेर शारदा माता मन्दिर होते हुए वाया पिण्डरारोड होकर मां नर्मदा के उदगम स्थल अमरकंटक ले आई। उसी अज्ञात शक्ति ने यहाँ कैवची ग्राम वासी ठाकुर हनुमान सिंह जी से मिलवाया। ठाकुर हनुमान सिंह जी तथा उनके साथियों के सहयोग से अमरकंटक के विभिन्न तीर्थो में विचरण करते हुए चौथे पहर पचरी पानी नामक एक निर्जन स्थान पर पहुँचते ही महाराजश्री को स्मरण आया कि पहले कभी हम यहाँ पर रह चुके हैं। इधर चारों तरफ बिलव, गुलर आदि वृक्षावली वाली पर्वत श्रृंखला के मध्य एक पत्थर व मिट्टी से पटे कुण्ड का दर्शन हुआ। ठाकुर हनुमान सिंह जी ने बताया की द्वापरयुग में अज्ञातवास के समय पाण्डवों ने इस कुण्ड का निर्माण करवाया था। उनकी बात सुनते ही आकाश वाणी हुई कि यह तुम्हारी तपोस्थली है। महाशिवरात्री पर्यन्त यहीं भजन-साधन करिए, तत्पश्चात आगे का मार्गदर्शन मिलेगा।

आकाशवाणी से प्राप्त निर्देशानुसार महाराजश्री ने यहाँ रहकर भजन-साधन का निश्चय किया। आज्ञानुसार कैवची ग्राम से आए साथियों ने यहाँ धूणा पानी का प्रबंध कर दिया। प्रातःकाल मानसिक संकल्पपूर्वक शिव पंचाक्षर जप अनुष्ठान आरंभ किया। यहाँ जिस दिन आसन लगा उसी दिन के बाद महाराजश्री ने फलाहार छोड़ दिया और केवल जल पर ही रहने लगे। कुछ ही दिनों में शरीर अत्यंत कृष हो गया था, इसलिए इधर आपश्री ने गोरक्षक (लाठी) का सहारा लेना प्रारंभ किया। अमरकंटक के एकांतवास में नियमित रूप से आदि गुरु भगवान शिवजी का दर्शन लाभ होता था। शिवरात्री से कुछ दिन पूर्व एक दिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में श्री नर्मदा माताजी के पूज्या गोमाता के रूप में दर्शन हुए। उन्होंने मानव भाषा में 108 गोमाताओं की सेवा करने का निर्देश प्रदान किया। उसके अनुसार कैवची ग्राम

के श्रद्धालुओं की ओर से महाशिवरात्रि के दिन गोभण्डारे का आयोजन किया गया। वहाँ एक ग्राम प्रमुख की सेकड़ों गोमाताएं पर्वत पर जंगल में चरने हेतु पधारी थी। साधना भूमि से 3-4 किलोमीटर दूर इन गोमाताओं का एक अस्थाई गोष्ठ बना हुआ था। श्रद्धालुओं के आग्रह से उस दिन ग्वाले गोमाताओं को चराने हेतु साधना भूमि के निकट ले आए। वहाँ पधारी हुई पूज्या गोमाताओं को महाराजश्री ने साष्टांग प्रणाम करके पूज्य भाव से गोभण्डारा के लिए तैयार मीठे चावल अर्पण किए परन्तु केवल 33 ग्राम सेठ की गोमाताओं ने ग्रहण किया शेष सब वनवासी गोमाताएं थी वे निकट नहीं पधारी। इसलिए 108 गोमाताओं के लिये तैयार मिले चावल के गोभण्डारे को लेकर रात के समय महाराजश्री वहाँ से नीचे उतरे थे। नीचे एक गोष्ठ में ग्राम सेठ की गोमाताएं विराज रही थी वे सब भण्डारा प्रेमी थी इसलिए मीठा चावल ग्रहण कर लिया।

उस रात को भारी तूफान आ जाने के कारण महाराजश्री लौटकर ऊपर नहीं पहुँच सके। अत: आपश्री ने रात्रिकालीन निवास कैवची गाँव से बाहर बने उस गोष्ठ के पास में किया। तूफान रुकने के उपरांत प्रात:काल श्रद्धालु ग्रामवासी महाराजश्री को पानी पचरी से अमरकंटक पर्वत के ऊपर पहुँचाने के लिए साथ में आए। अमरकंटक पर्वत पर पुन: कैवची गांव से चढ़ाई करते समय सबसे आगे गोरक्षक (लाठी) के सहारे-सहारे महाराजश्री चल रहे थे। वहाँ एक अद्‌भुत घटना हुई। महाशिवरात्रि को प्रात:काल एक बड़ा गोपालक किसान जो निकट ग्राम पंचायत का सरपंच था जिनकी सैकड़ों गोमाताएं महाराजश्री की साधन स्थली से कुछ किलोमीटर दूर जंगल में चराने हेतु लाई हुई थी, वह सज्जन अपने ग्वालों से महाराजजी के विषय में सुनकर कुछ साथियों सहित महाशिवरात्रि को दर्शन करने आए। वे काफी दूर थे तभी उन्हें महाराज जी के आसन के पास एक खूंखार सिंह बैठा हुआ दिखाई दिया। यह दृश्य देखकर उपरोक्त गोपालक किसान तथा उनके साथी घबराकर कैवची ग्राम की ओर नीचे उतरने लगे।

उधर श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज के साथ भक्त मण्डल साधन स्थली आ रहे थे। कुछ दूरी पर दोनों दलों का आमना सामना हुआ। राम-श्यामा के पश्चात महाराज जी को छोड़कर अन्य महानुभावों को साधनासन के पास वनराज सिंह बैठने की जानकारी दी गई। वे लोग आपस में परिचित थे। इसलिये आपस में सब समझ गये। इस विशेष दृश्य को देखने के लिए दोनों समूह एक साथ आसन की ओर बढ़ने लगे। सबसे आगे श्रद्धेय गोऋषि जी अपने ध्यान में चल रहे थे और पीछे-पीछे अन्य सभी लोग चल रहे थे।

काफी दूरी पर थे तब साधनासन के निकट बैठा हुआ सिंह स्पष्ट दिखा तो वहीं पर सभी लोग चुपचाप ठहर गए। इस घटना से अनजान महाराज जी आसन की ओर बढ़ते रहे। साधनासन से करीब 50 मीटर की दूरी पर रहे होंगे और आसन की तरफ दृष्टि उठाकर देखा तो सामने वनराज सिंह विराजमान थे।

अचानक इस भयावने दृश्य को देखा तो महाराज जी ने पीछे आने वाले श्रद्धालुओ के लिये दृष्टि घुमाई तो कोई नहीं दिखा। इससे बड़ा आश्चर्य हुआ कि सब छोड़कर चले गये। विचार करने लगे कि भगवान कौनसी लीला कर रहे हैं। महाराजश्री सोचने लगे कि यह स्वप्न है अथवा यथार्थ। असमंसज में शरणागत भाव से आगे बढ़कर साधनासन को प्रणाम करके एकाग्रता पूर्वक हरिस्मरण करते हुए आसन पर विराजमान हो गए। कुछ देर पर्यन्त वनराज सिंह बैठा-बैठा अपलक दृष्टि से देखता रहा और फिर अचानक खड़ा होकर साधनासन को दाएं रखकर चार-पाँच मीटर दूर-दूर घूमते हुए महाराज जी के सामने आ गया तब ....शेष अगले अंक में

माँ

(परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज)

एक बार सूरदास जी भगवान के मंदिर में गए तो लोगों ने उनसे कहा आप कैसे आए? वे बोले भगवान का दर्शन करने के लिए। लोगों ने पूछा तुम्हारी आंखें तो है नहीं दर्शन किससे करोगे? वे बोले दर्शन के लिए मेरे नेत्र नहीं है तो क्या ठाकुर जी के भी नेत्र नहीं है? वे तो मेरे को देख लेंगे ना? वे मेरे को देखकर प्रसन्न हो जाएंगे।

तो अब भाइयों-बहनों ध्यान दो- जैसे हमारे नेत्र ना हो तो भी भगवान के तो नेत्र हैं, उनसे वे हमारे को देखते हैं। ऐसे ही सज्जनों हमारे को भगवान का ज्ञान ना हो तो क्या भगवान को भी हमारा ज्ञान नहीं है क्या? हमारी जानकारी में भगवान नहीं आए तो हम सूरदास हुए तो क्या भगवान की जानकारी में हम नहीं है? जब हम उनकी जानकारी में है तो हमें कभी किसी बात की चिंता करनी ही नहीं चाहिए। जैसे बालक के जब तक उसकी दृष्टि में है तब तक उसका अनिष्ट कोई कर नहीं सकता और उसके लिए जो कुछ भी चाहिए उसका सब प्रबंध माँ करती है। ऐसे ही जब हम भगवान की दृष्टि में है, उनकी द्ष्टि से कभी ओझल होते ही नहीं तो हमारे लिए रक्षा, पालन, पोषण आदि जो कुछ आवश्यक है वह सब कुछ भी वे करेंगे।

भगवान ने गीता में कहा कि अप्राप्त की प्राप्ति करा देना और प्राप्त की रक्षा करना ये दोनों काम मैं करता हूँ। 'योगक्षेमं वहाम्यहम्'। मेरे में चित्त लगने से तू संपूर्ण विघ्नों को मेरी कृपा से तर जाएगा और अविनाशी शाश्वत पद की प्राप्ति भी मेरी कृपा से हो जाएगी। तात्पर्य है कि उनके ज्ञान में हम हैं, हमारे पर उनकी कृपा है तो वह विघ्नों से भी रक्षा करेंगे और अपनी प्राप्ति भी करा देंगे परन्तु हमारा चित्त भगवान में रहना चाहिये, हमारा भरोसा सब भगवान पर रहना चाहिए। हमारा विश्वास भरोसा उन पर न रहने पर भी वे तो हम पर कृपा करते ही हैं, हमारा सब प्रबंध वे कर ही रहे हैं, हमारा जैसे कल्याण हो हमारे प्रति उनकी वैसी ही चेष्टा रहती है। हम सुख और दुःख दो रूप में देखते हैं कि सुख अलग है और दुःख अलग है, परंतु भगवान के यहाँ सुख-दुःख दोनों अलग-अलग नहीं है। जैसे-

लालने ताड़ने मातुर्नाकारुण्यं यथार्भके।
तद्वदेव महेशस्य नियन्तुर्गुणदोषयोः।।

लालन पालन में और मार में माँ के दो भाव नहीं होते। एक ही भाव से माँ बच्चे का लालन प्यार करती है और ताड़ना भी कर देती है अर्थात प्यार भरे हृदय से प्यार भी करती है हित भरे हाथ से थप्पड़ भी लगा देती है तो क्या माँ बालक का अनिष्ट करती है? कभी नहीं, ऐसे ही भगवान कभी हमारी मनचाही बात कर दे और कभी हमारी मनचाही न करे तो भगवान के ऐसा करने में देखना चाहिए कि वह हमारे माँ है माँ वह हमारे मन के अनुकूल प्रतिकूल जो कुछ करे उसमें हमारा हित ही भरा है। चाहे हम उसे समझें या न समझें।

माँ की चेष्टा को बालक समझ सकता है क्या? पिता को समझने की बालक में ताकत है क्या? बालक में वह ताकत है ही नहीं जो माँ की चेष्टा को समझ सके। बालक को तो माँ की चेष्टा को समझने की जरूरत ही नहीं है। वह तो बस माँ की गोद में पड़ा रहे। ऐसे ही भगवान क्या करते हैं, कैसे करते हैं इसे समझने की हमें कोई जरूरत नहीं है। वे क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं इसको जानने की भी हमें कोई जरूरत नहीं है। क्या बच्चा माँ को जानता है कि माँ कहाँ पैदा हुई है, किसकी बेटी है, किसकी बहन है, किसकी स्त्री है, किसकी देवरानी है, किसकी जेठानी है, किसकी ननद है, किसकी बुआ है, माँ कहाँ रहती है, उसका किससे पालन होता

है? माँ क्या करती है, किस समय किस धंधे में लगी रहती है आदि बातों को बालक जानता ही नहीं और उसको जानने की जरूरत भी नहीं है। ऐसे ही हमारी माँ अर्थात भगवान कैसे हैं, कौन हैं, वह सुंदर है कि आप सुंदर हैं, वह क्रूर है कि दयालु है, वह ठीक है कि वह बेठीक है, वह हमारे अनुकूल है कि प्रतिकूल है आदि-आदि बातों से हमें क्या मतलब। बस वह हमारी माँ हैं, वह हमारे लिए जो ठीक होगा वही करेंगे। हम क्या समझें कि यह ठीक है या बेठीक है, अपना ठीक बेठीक समझना भी क्या हमें आता है। हमें यह ज्ञान है क्या? हमें यह दिखाता है? अरे सूरदास को क्या दिखे? हम क्या समझें कि यह ठीक है कि बेठीक है, अच्छा है कि मंदा है? इन बातों को हम क्या समझें और क्यों समझें? हमें इन बातों के समझने की कुछ भी जरूरत नहीं है। बस हम उनके हैं और वे हमारे हैं। वे ही हमारे माता-पिता भाई, बंधु, कुटुंबी आदि सब कुछ है और वे ही हमारे धन, संपत्ति, वैभव, जमीन जायदाद आदि सब कुछ है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम देवदेव।।

तुम्हारी माता कौन है? ईश्वर। तुम्हारा स्वामी कौन है? ईश्वर। तुम्हारा बाप कौन है? ईश्वर। तुम्हारा भाई कौन है? ईश्वर। तुम्हारा साथी कौन है? ईश्वर। तुम्हारा काम करने वाला कौन है? ईश्वर। हमारे तो सब कुछ वही है, सब कुछ माँ ही है। जैसे बच्चों के लिए धोबी भी माँ है, नाई भी माँ है, दीदी भी माँ है, भाई भी माँ है, ईश्वर भी माँ है, गुरु भी माँ है, नौकर भी माँ है, सफाईकर्मी भी माँ है आदि-आदि। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सब कुछ काम करने वाली माँ है। ऐसे ही हमारे सब कुछ भगवान ही है तो हमें किस बात की चिंता। चिंता दीनदयाल को, मो मन सदा आनंद। हमारे मन में तो सदा आनंद ही आनंद है, मौज ही मौज है। हमारी चिंता वे करें ना करें, हमें इस बात की क्या परवाह है। जैसे माँ बालक की चिंता करें ना करें इससे बालक को क्या मतलब। वह आप ही चिंता करती है बालक की क्योंकि बालक उसका अपना है। यह उस पर कोई एहसान है कि वह बालक का पालन करें। अरे यह तो उसका काम है वह करें ना करें इससे बालक को क्या मतलब। बालक को तो इन बातों से कुछ मतलब नहीं। ऐसे ही भगवान हमारी माँ है, बस वह हमारे माँ है और हमें ना कुछ करना है, ना जानना है, ना पढ़ना है किंतु हरदम मस्त रहना है। मस्ती से खेलते रहना है माँ की गोदी में। खेलते रहे, हंसता रहे, खुश होता रहे। क्यों खुश होता रहे?क्योंकि इससे माँ खुश होती है, राजी होती है। अर्थात हम प्रसन्न रहें तो इसमें माँ राजी होती है।

माँ की राजी के लिए हम राजी रहते हैं, खेलते हैं, कूदते हैं और काम धंधा भी हम माँ की राजी के लिए ही करते हैं और बातों से हमें कोई मतलब ही नहीं है। हमें तो एक माँ से मतलब है। वह सब बालक के पालन के लिए ही होता है। माँ का बल है, बुद्धि है, योग्यता है, विद्या है, शरीर है, कपड़े हैं, घर आदि सब कुछ बच्चों के लिए ही होता है। ऐसे ही भगवान के पास जो कुछ सामर्थ्य है, शक्ति है, विलक्षणता है, वह सब केवल हमारे लिए ही है। अगर हमारे लिए नहीं है तो किसके लिए हैं? इस वास्ते हमें कभी किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए। कभी चिंता आ भी जाए तो भगवान से कह दो- हे नाथ देखो यह चिंता आ गई। जैसे बालक को प्यास लगती है तो वह भू-भू करता है तो माँ पानी पिला देती है। अब किसी भी कोष में भू नाम पानी का नहीं आया हैं पर भू कहते ही माँ पानी पिला देती है। ऐसे ही हम किसी भी भाषा में कुछ भी कहते हैं तो उसको माँ अर्थात भगवान समझ जाते हैं। गूंगा तेरी बात को और न समझे कोई, का समझे तेरी

मावड़ी, के समझ तेरी जय। जैसे गूंगे की भाषा उसकी माँ समझे या लुगाई समझे और कौन समझे उसकी भाषा को। परंतु हमारी भाषा को भगवान समझे कि नहीं समझे इससे भी हमें मतलब नहीं रखना है। अपने तो माँ-माँ करते जाओ बस जैसे बालक माँ को किसी विधि से थोड़ी ही याद करता है वह तो बस माँ-माँ करता रहता है। ऐसे ही माँ-माँ करते रहो बस और हमें कुछ करना ही नहीं है। माँ प्रिया लगती है, माँ का नाम अच्छा लगता है इस वास्ते प्यार से कहो माँ, माँ, माँ।

हमें एक सज्जन मिले थे। वे कहते थे कि हम कभी माला फेरते हैं तो क्या करते हैं कि जैसे जीमने में अर्थात भोजन करने में आनंद आता है तो सबरका लेते हैं, ऐसे ही माला फेरते हैं तो सबरका लेते हैं। अब भजन की क्या विधि है, अपने को सबरका लेना है। बस मौज से नाम उच्चारण करें कीर्तन करें, कुछ भी करें तो मस्त होकर करें। क्या होगा, कैसे होगा इन बातों से अपना कोई मतलब ही नहीं है। इन बातों से मतलब माँ को है और इन बातों की माँ को ही बड़ी चिंता होती है। जैसे माता यशोदा और माता कौशल्या को चिंता होती है कि मेरे लाल का ब्याह कब होगा, पर लाल तो समझता ही नहीं की ब्याह क्या होता है, क्या नहीं होता है। वह तो अपनी मस्ती में खेलता ही रहता है। ऐसे ही हमारी माँ को चिंता होती है कि बच्चे का पालन पौषण कैसे होगा, क्या होगा पर हमें तो इससे कोई मतलब नहीं है और इसको जानने की जरूरत भी नहीं है, माँ जाने, माँ का काम जाने।

अपने तो माँ जाने माँ का काम जाने, अपने तो आनंद ही आनंद में रहना है और माँ की गोद में रहना है। हमारे में और बालक में फर्क इतना ही है कि हम रोते नहीं बालक तो भोलेपन से, मूर्खता से रोता है पर हमारी तो माँ है हम रोवे क्यों, हम तो केवल हंसते रहें, मस्ती से माँ की गोदी में पड़े रहें। कैसी मौज की बात है, कितने आनंद की बात है। तू जाने तेरा काम जाने ऐसा कहकर निश्चिन्त हो जओ निर्भय हो जाओ, नि:शोक हो जाओ और निशंक हो जाओ। हमें तो आनंद ही आनंद में रहना है। हरदम मस्ती में रहना है। अपना तो कुछ काम है ही नहीं सिवाय मस्ती के, सिवाय आनंद के। हमारी जिम्मेदारी तो एक ही है कि हरदम मस्त रहना, आनंद में रहना। माँ माँ नाम लेना अच्छा लगता है माँ नाम हमें प्यारा लगता है, इस वास्ते लेते हैं। राम राम नाम मीठा लगता है, इस वास्ते लेते हैं, इसमें कोई विधि थोड़े ही है कि इतना नाम लें।

इतना उतना क्या हम अपनी मर्जी से माँ माँ करते रहें। किस तरह करना है, कितना करना है। कैसा भजन किया, कितना भजन किया इससे हमें क्या मतलब। हमें माँ का नाम प्यारा लगता है इस वास्ते खुशी से, प्रसन्नता से लेते हैं। बस अपने तो मौज हो रही है, आनंद हो रहा है, खुशी आ रही है प्रसन्नता हो रही है मुख राम कृष्ण राम कृष्ण कीजिए रे, सीताराम ने भजे ने लावो लीजिए रे। राम राम राम

सुखी होने की बातें

जो प्रतिदिन गोवंश को घास-चारा, पानी, औषधि आदि प्रदान करता है उसे अश्वमेघ यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता है।

जिस घर में गोसेवा होती है उस घर में अकाल मृत्यु नहीं होती है और मनुष्य पूर्ण आयु प्राप्त कर गोलोक को प्राप्त होता है।

गो-गव्यों के नियमित सेवन से शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ मिटकर आध्यात्मिक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

जय गोमाता! जय गोपाल!

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

बाबा बोले- हम ग्वारिया है सब काम शस्त्र विधि से करते हैं। गोचारण का मुहूर्त आयेगा, पण्डितजी आयेंगे, पंचांग खोलेंगे, मुहूर्त बतायेंगे तब गोपूजन कर गोचारण हेतु जाना। ठाकुरजी बोले मैं तो तभी कुछ खाऊँगा-पिऊँगा जब पण्डितजी आ जायेंगे। लाला का इतना कहना हुआ और पंडित जी शांडिल्यजी महर्षि तत्काल आ गए।

महर्षि ने पूछा- नंदराय जी आपको लला काहे को रो रहे हो? पुरोहित जी आप खूब पधारे। गुरुजी आप बड़े भले आए। लाला सवेरे से ही किसी के हाथ में नहीं आए रहयो है। बालक कह रहयो है कि मैं ढींगरा है गयो हूँ अब बछड़ा नहीं चराऊँगो, अब मैं गैया चराऊँगो। कृपा करके कोई पंचांग देख लो और देखो पंडित जी 6 साल को है छठे वर्ष में इसलिए कह दी कि जिसमें जानबूझकर दो-तीन साल पीछे का मुहूर्त बताएं के बोले अरे बाबा नंदराय जी है, बृजराज तुम बड़े ही भाग्यशाली हो तुम्हारा लाल तो मुहूर्त देखकर ही रोयो है। आज कार्तिक सुदी अष्टमी है आज से उत्तम गोचारण को दूसरो कोई मुहूर्त नहीं है। इसलिए लाला से गोमाता का पूजन करवाकर गोचरण आरंभ करो।

हंसते हुए नंदराय जी ने कहा- जय हो पंडित जी महाराज! हमारा लाला मुहूर्त देखकर रोया और आप मुहूर्त देखकर आए हो, हमारे संतोष के लिये ही आपने पत्र उलट पुलट किया है। मुहूर्त तो पहले से विचार किया हुआ है। पद्म पुराण का बड़ा सुंदर श्लोक है-

कार्तिके तु शुक्लाष्टमी स्मृता गोपाष्टमी बुधैः।
तद्दिनाद् वासुदेवोऽभूद् गोपः पूर्वं तु वत्सपः।।

अर्थ : कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को विद्वान गोपाष्टमी कहते हैं। उस दिन से वासुदेव (श्रीकृष्ण) गोप (ग्वाला) कहलाए, पहले वे वत्सप (बछड़े चराने वाले) थे।

यह श्लोक गोपाष्टमी के महत्व को दर्शाता है। जब भगवान कृष्ण ने पहली बार गायें चराई। विश्व में सब जगह गोपाष्टमी को गोप पूजन होता है, उत्सव होता है उसका प्रमाण पद्मपुराण का उक्त श्लोक है। इससे पहले श्री कृष्ण बछड़े चराने वाले थे और उस दिन से श्री ठाकुर जी ग्वारिया गोपाल हो गए। बोलो ग्वालिया गोपाल की जय।

श्री शांडिल्य जी ने एक बात और कही कि आपको लाला गैया तो चरावेगो, गोचारण तो करेगो लेकिन एक समस्या है। क्या? बोले अपूर्व सुंदर है, अभी तक तो बछड़ा चरावे में तो थोड़ी दूर तक जाए करें है, मगर अब गैया चरावन को तो दूर जानो पड़ेगो वहाँ नजर लगेगी, नजर और कछु हवा बाजार को चक्कर पर सके। फिर मुझे मत कहियो। मैया बोली पंडित जी कछु मत पूछो, मैं मैया हूँ याकी, मेरी स्वयं की नजर इसे न लग जावे इसके लिये दिन में 10 बार नजर उतारती हूँ। मैं अपने दृष्टि दोष के भय से याकी नजर उतारूँ दिन में 10 बार। जब-जब कहीं तो खेलने जावे तब राई नमक से नजर उतारती हूँ।

मैया बोली- सही कह रहे हो पंडितजी, जब इतना दूर गैया चराने जायेगा तब तो बहुत जोर की नजर लगेगी। तो इसका कुछ उपाय हो तो करो। कोई गोली गंडा ताबीज हो तो कछु बांध दो। नरसिह मंत्र का गंडाऊ तो हम बांधेंगे तैयार करके नजर गुजर ना लगे इसके लिये, लेकिन फिर भी पूरा समाधान नहीं होगा। पूरा समाधान तो तब हो, गंडाऊ बांधे और कारी कमरिया ओढ़ के जाए तो नजर नहीं लगेगी। बोलो वक्त वत्सल भगवान की जय।

बाबा बोले- यह कोई बड़ी चीज है क्या? कमरिया तो घर में बहुत पड़ी है। अम्बार पड़े हैं

कमरिया के। ब्रजराज जी ने सेवक को कहा- जाओ लाला के लिये नई सुन्दर कढ़ाईदार कारी कमरिया लेकर आओ। पंडितजी बोले- इस कमरिया से काम नहीं चलेगा। बाबा बोले- तो कौन सी कमरिया चाहिए? बोले श्री राधा लाडली जो बृजभानु राय की लाडली बेटी है कीर्ति कुमारी है, पालना में झूलती रहे उस राधा लाडली के पालने में जो अत्यंत सुकोमल अतिशय सुकुमाल है वो चाहिये।

एक बहुत उत्तम क्वालिटी का पशमीना होता है, बहुत ही सर्वोत्तम क्वालिटी का पशमीना आपने देखा होगा। अब नकली पशमीना तो बहुत आते हैं। चाहे जितना बढ़िया ऊनी कपड़ा हो, उसे अकेले पहनो तो थोड़ी देर में खुजली चलेगी, इसलिए उनके भीतर हमेशा सूती कपड़ा पहनने की परंपरा है। यह पशमीना इतना हल्का और इतना कोमल होता है कि आप खाली शरीर पर भी उसका कपड़ा पहनोगे तो भी आपको कभी खुजली नहीं होगी। आपको चुभेगा नहीं, बहुत कोमल होता है। वो ऐसी कोमल वह कामरी है वह कामरी ओढ़कर यदि लाला गैया चरावन को जाए तो फिर पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो लाला को कछु बिगाड़ सके। वो कामरी ओढ़ने के बाद लाला पर कोई टोटका-तोमना, कोई नजर गुजर नहीं रहेगा।

बाबा ने पूछा कीर्ति कुमारी राधा लाडली जिस कमरिया पर पौढ़े उस कमरिया का कोई विशेष महत्व है क्या? बाबा कछु मत पूछो एक तो राधा जी को महत्व इतना है कि शेष शारदा भी वर्णन नहीं कर सके, तो मैं एक बड़ो-बूढ़ो एक जिह्वा से कहाँ तक करूँगा। अनन्तान्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ प्रकाश हो रहा है यह श्री राधा लाडली की लक्ष्मण चंद्रिका की उज्जवल छटा का ही प्रकाश है। तुम समझो ना है, तुम्हारे लाला पर जो कछु है अब तक जो चमत्कार है वह सब चमत्कार राधा जी का ही है, लाला का नहीं है, यह तो बहुत भोलो है। अच्छा गुरुजी!

वह कमरिया कैसी है? अब सुनो- वा को तानो तो डारो श्री ब्रह्मा जी ने, तनो बानो ब्रह्मा जी ने डारो। ओ बुनियो श्री शिव जी ने और वा की चित्रकारी की है श्री नारायण ने। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों ने मिलकर वह कमरिया बुनी है। तीनों ने बुनकर देवराज इंद्र को दी और इंद्र लाली के जन्म के समय वृषभानु जी को देकर गये। यह कमरिया त्रिदेवों की भेजी हुई है कि यह लाली है बार-बार नजर गुजर लगेगी इसलिये इस पर ही सुलाना।

अब तो बाबा बोले भैया ऐसी कमरिया है तब तो जरूर चलो, पर हे शांडिल्य महर्षि मांगने का काम बड़ा खराब है। अभी सज्जन जी बोल रहे थे कि भगवान की आज्ञा से ग्वालबाल मांगने गए, खूब अनुनय विनय की पर ब्राह्मणों पर जूं भी नहीं रेंगी। वे कुछ बोले नहीं खाली ऊँ स्वाह, ऊँ स्वाह करते रहे। ऐसा नहीं कि उन्होंने सुना नहीं, सुना भी लेकिन न तो हाँ बोल पाये और न ही ना बोले।

देखो एक बात है- आपके मन में देने का भाव नहीं है, उत्साह नहीं है, कंजूसी है बहुत ज्यादा तो लज्जा मत करो सीधे हाथ जोड़ो और कह दो कि महाराज, मैं यह नहीं कर पाऊँगा। आप अन्यत्र प्रयास करें। लेकिन किसी को लटकाकर न रखें। कह दो कोई बात नहीं। आप नहीं दे सकते। आपके देने का स्वभाव ही नहीं है, नहीं दे सकते तो जाने दो उनका समय तो खराब नहीं होगा। अपने अभिष्ट की पूर्ति के लिए अन्यत्र चला जाएगा। आप दो भी मत और मना भी मत करो। ना हां करो ना ना करो, बेचारा खड़ा है तब क्या होगा?

मांगन से मरना भला जो कोई मांगन जाए।
उनसे पहले वे मुए जिन मुख निकसत नाए।।

मांगने वाला तो मर गया पर, जिसने ना कर दिया वह और जल्दी मर गया और जिसने नहीं तो हाँ कहा और न ही ना कहा वह व्यक्ति न तो मरे में है ना जिंदे में है। वह तो व्यक्ति ही कहलाने के लायक नहीं है। अरे

कम से कम सून तो अच्छा है, उसने ना कर दिया। ना हां किया ना ना किया, कुछ लोग ऐसे होते हैं।

एक राजा था उसके मंत्री का नाम था नंदन। क्या नाम था? याद रखना नंदन नाम था उसका और जैसा राजा महा कंजूस था, नंदन उसका ही सवा गुणा कंजूस था। राजा पर कोई सहायता मांगने आवे किसी प्रकार की राजा बोलता- नंदन तो कहता जी सरकार, आ गया। अरे भाई, इनका समाधान करो और वह समाधान इतना बढ़िया करता था कि फिर चमडी चली जाए पर दमड़ी ना जाए। बहुत विलक्षण था वह नंदन।

एक पंडित जी आए, उनके बिटिया विवाह के योग्य हो गई, सयानी थी। गरीब ब्राह्मण थे राजा के पास गए कि महाराज पहले लोगों ने कह दिया था कि हम सहयोग करेंगे, अब बस दो दिन बाद बरात आने वाली है और मेरे पास तो कुछ नहीं है। मैं तो भोजन भी नहीं कर सकता। जिन लोगों ने सहयोग करने के लिए कहा था उन्होंने तो हाथ खड़े कर दिए। आप राजा है, मैं ब्राह्मण हूँ, मेरी बेटी की और मेरी लाज अब आपके हाथ में है। नहीं-नहीं पंडित जी घबराहो मत। अरे नंदन! हुकम, जी सरकार। अरे भाई पंडित जी आये हैं, देखो कितने घबरा रहे हैं। इनका समाधान करो। वह तो अभ्यस्त ही था। उसको उसने कुछ भी नहीं दिया। अब एक दिन बीत गया, 2 दिन बीत गया तीसरे दिन तो बारात आने वाली थी। बारात आने में बस थोड़ी समय बाकी था।

पंडितजी राजा के भरोसे पर रह गये। कुछ भी सहयोग नहीं मिला तो उनका तो सब कार्य बिगड़ने वाला था। पंडितजी क्रोध से तिलमिला गये। अब पंडित जी भरे दरबार में पहुँच गये। पंडित जी को देखकर राजा बोला- पंडितजी आप बहुत घबराये हुए हो, आपका समाधान नहीं हुआ क्या? अरे कुछ नहीं हुआ। हम जैसे पहले आए थे उससे भी खराब हालत में इस समय है। राजा ने फिर वो ही किया। नंदन! नंदन आया, जी सरकार। नंदन को देखते ही ब्राह्मण की क्रोधाग्नि में जैसे घी पड़ गया हो। जलती हुई आग में घी पड़ जाए तो कैसे अग्नि भभक जाती है, वैसे पंडित जी भभक गये। अरे इस मूर्ख को सामने से हटाओ। यही सबसे बड़ा अशुभ है। राजा बोले- क्यों? पंडित तो पंडित थे उन्होंने कहा-

अग्रे नकार: पश्चान नकार: मध्ये नकारेण हतो दकार:।
एवं नकारत्रयसंयुतस्य का दानशक्ति: खलु नन्दनस्य।।

नंदन शब्द में कितने ना है? एक पहले, एक मध्य और एक बाद में भी न। इसके नाम में ही 3 ना है तो यह देगा क्या? तो राजा ने कहा बीच में एक द भी तो है। बोले बीच में द भी तो है। पंडितजी बोले द है तो सही पर न ने द का पेट फाड़ दिया। मध्य नकारेण हतो दकार: न द के पेट में घुस गया, द का पेट फाड़ दिया। अब तो द है ही नहीं द को मार डाला। अब तो केवल तीन न है। भैया नंदन से कुछ नहीं मिलेगा, आपको कुछ देना हो तो दो नहीं तो मैं कुछ न कुछ देकर जाऊँगा। आशीर्वाद तो दे नहीं सकता, श्राप देकर जाऊँगा। राजा घबरा गया। अरे नहीं नहीं नहीं। नंदन, जाओ पंडितजी के लिये तुरन्त कोई व्यवस्था करो।

मानव सेवा संघ के संस्थापक शरणानंद जी का नाम सुना होगा आप लोगों ने। मानव सेवा संघ के संस्थापक स्वामी श्री शरणानंद जी महाराज इस देश के एक महान दार्शनिक थे, बहुत बड़े चिंतक विचारक थे, उनका दर्शन अकाट्य है और श्री शरणानंद जी महाराज का साहित्य पढ़ने योग्य है। ऐसी कथा कहानी तो है नहीं की तुरंत समझ में आ जाए, कई बार मनोयोग पूर्वक पढ़ेंगे तब आपको समझ में आएगा। पर शरणानंद जी का साहित्य बुद्धिजीवी वर्ग को तो अवश्य मनोयोग पूर्वक पढ़ना चाहिये। शरणानंद जी के जैसे तो शरणानंद जी के विचार है। शरणानंद जी का एक वाक्य है, वे कहते हैं-बटोरना विषाद है, बांटना प्रसाद है। ....अगले अंक में

भविष्य पुराण में गोमहिमा

क्षीरोदतोयसम्भूता याः पुराऽमृतमन्थने ।
पंचगावः शुभाः पार्थ पंचलोकस्य मातरः ।।
नन्दा सुभद्रा सुरभिः सुशीला बहुला इति ।
एता लोकोपकाराय देवानां तर्पणाय च ।।
जमदग्निभरद्वाजवसिष्ठासितगौतमाः ।
जगृहुः कामदाः पंचगावो दत्ताः सुरैस्ततः ।।

भगवान् श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा- पार्थ! समुद्रमन्थन के समय क्षीर सागर से पाँच लोकों की मातृस्वरूपा कल्याणकारिणी जो पाँच गौएँ उत्पन्न हुई थीं, उनके नाम इस प्रकार हैं- नन्दा, सुभद्रा, सुरभि (कामधेनु) सुशीला और बहुला हैं।

ये सभी गौएँ समस्त लोकों के कल्याण तथा देवताओं को हविष्य के द्वारा परितृप्त करने के लिये आविर्भूत हुई थीं। फिर देवताओं ने इन्हें महर्षि जमदग्नि, भारद्वाज, वसिष्ठ, असित और गौतम मुनिको समर्पित किया और उन्होंने इन्हें प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण किया। वे सभी गौएँ सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करनेवाली कामधेनु कही गई हैं।

गोमयं रोचना मूत्रं क्षीरं दधि घृतं गवां।
षडङ्गानि पवित्राणि संशुद्धिकरणानि च।।

गौओं से उत्पन्न दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र और रोचना- ये छः अंग (गोषडङ्ग) अत्यन्त पवित्र हैं और प्राणियों के सभी पापों को नष्ट कर उन्हें शुद्ध करने वाले हैं।

गोमयादुत्थितः श्रीमान् बिल्ववृक्षः शिवप्रियः।
तत्रास्ते पद्महस्ता श्रीः श्रीवृक्षस्तेन स स्मृतः।
बीजान्युत्पलपद्मानां पुनर्जातानि गोमयात्।

श्री संपन्न बिल्व-वृक्ष गौओं से उत्पन्न हुआ है। यह भगवान् शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। चूँकि उस वृक्ष में पद्महस्ता भगवती लक्ष्मी साक्षात् निवास करती हैं, इसलिए इसे श्रीवृक्ष भी कहा गया है। बाद में नीलकमल एवं रक्तकमल के बीज भी गोबर से ही उत्पन्न हुए थे।

गोरोचना च माङ्गल्या पवित्रा सर्वसाधिका।
गोमूत्राद् गुग्गुलुर्जातः सुगन्धिः प्रियदर्शनः।।
आहारः सर्वदेवानां शिवस्य च विशेषतः।
यद्बीजं जगतः किंचित्तज्ज्ञेयं क्षीरसंभवम्।।

गौओं के मस्तक से उत्पन्न परम पवित्र 'गोरोचना' समस्त अभीष्टों की सिद्धि करने वाली तथा परम मंगलदायिनी है। अत्यन्त सुगन्धित गुग्गुल नाम का पदार्थ गौओं के मूत्र से ही उत्पन्न हुआ है। यह देखने से भी कल्याण करता है। यह गुग्गुल सभी देवताओं का आहार है, विशेष रूप से भगवान् शंकर का प्रिय आहार है।

दधिजातानि सर्वाणि मङ्गलान्यर्थसिद्धये।
घृतादमृतमुत्पन्नं देवानां तृप्तिकारणम्।।

संसार के सभी मंगलप्रद बीज एवं सुन्दर-से -सुन्दर आहार तथा मिष्ठान्न आदि सब-के-सब गौ के दूध से ही बनाये जाते हैं। सभी प्रकार की मंगल कामनाओं को सिद्ध करने के लिए गाय का दही लोकप्रिय है।देवताओंको परम तृप्त करने वाला अमृत नामक पदार्थ गाय के घी से ही उत्पन्न हुआ है।

ब्राह्मणाश्चौव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतं।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति।।

ब्राह्मण और गौ ये दो नहीं हैं, अपितु एक ही कुल के दो रूप हैं। ब्राह्मणों में तो मंत्रों का निवास है और गौ में हविष्य स्थित है; इन दोनों के संयोग से ही विष्णुस्वरूप यज्ञ सम्पन्न होता है। (यज्ञो वै विष्णुः)।

गोषु यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोषु देवाः प्रतिष्ठिताः।
गोषु वेदाः समुत्कीर्णाः सषडङ्गपदक्रमाः।।

गौओं से ही यज्ञ की प्रवृत्ति होती है और गौओं में सभी देवताओं का निवास है। छहों अंग शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और पद, जटा, शिखा, रेखा आदि क्रमों के साथ सभी वेद गौओं में ही सुप्रतिष्ठित हैं।

गाय से कामनापूर्ति के सिद्ध प्रयोग

साभार : गवार्चनप्रयोगः

(शिखा एवं यज्ञपवीतधारी द्विज ही ऊँ से युक्त मंत्रों का जप करे, अन्य प्रणवरहित मंत्र का जप करें)

1. यात्रा आरम्भ करने से पूर्व निर्विघ्नतया इष्टसिद्धि के लिये इस मन्त्र का जप करे-

कामधेनो नमस्तुभ्यं धर्मकामार्थसाधिके।
यात्रायामिष्टसिद्ध्यन्ते सुखेनागमनं भवेत्।।

हे धर्म, अर्थ और सभीकामनाओं की सिद्धि प्रदान करने वाली पूजनीय कामधेनो! तुम्हें नमस्कार है। यात्रा में इष्टसिद्धि हो जाने के बाद सुखपूर्वक अपने घर मेरा आगमन हो।

2. सब प्रकार की पीड़ा के निवारण के लिये इस मन्त्र का जप करें-

धेनुःपयस्विनी श्यामा सुरभिर्नन्दिनी तथा।
प क संस्मरेन्नित्यं सर्वपीडानिवारणम्।।

धेनु, पयस्विनी, श्यामा, सुरभि और नन्दिनी इन पाँचों का नित्य स्मरण करने से सभी पीड़ाओं का निवारण होता है।

3. सत्पुत्र की प्राप्ति के लिये-

गोसेवान्ते जपेन्नित्यं ॐ नन्दिन्यै नमो मनुम्।
नन्दिनीसम्प्रसादाद्वै सत्पुत्रान् लभते गृही।।

गोसेवा के अन्त में प्रतिदिन 'ॐ नन्दिन्यै नमः' इस मन्त्र का जप करने से गृहस्थ नन्दिनी गो की कृपा से निश्चय ही सत्पुत्रों को प्राप्त करता है।

4. समुचित धन की प्राप्ति के लिये-

ॐ समृद्ध्यै नमो मन्त्रं षण्मासावधि यो जपेत्।
गोमातुः कृपयाऽवश्यं स कुबेरसमो भवेत्।।

'ॐ समृद्ध्यै नमः' इस मन्त्र का जो छः महीने तक जप करता है, वह गोमाता की कृपा से अवश्य ही कुबेर तुल्य हो जाता है।

5. धन, पुत्र और यश की प्राप्ति के लिये-

ॐ सुरभ्यै नमो मन्त्रं यो जपेन्नियतः शुचिः ।
धनी पुत्री यशस्वी च भवेन्नैवात्र संशयः ।।

जो पवित्रचित्त से नियमपूर्वक 'ॐ सुरभ्यै नमः' इस मन्त्र का जप करता है, वह धनवान्, पुत्रवान् और यशस्वी होता है। इसमें संशय नहीं है।

6.पति-पत्नी में प्रेम और सुव्यवस्थित दाम्पत्य जीवन के लिये-

यो जपेत्प गव्याशी सिद्धं मनोरमामनुम् ।
दाम्पत्यं सुस्थिरं तस्य गोप्रसादान्न संशयः ।।

जो पंचगव्य का पान करते हुए 'ॐ मनोरमायै नमः' इस सिद्धमन्त्र का जप करता है, गोमाता की कृपा से उसके दाम्पत्य जीवन में सौहार्दपूर्वक स्थिरता बनी रहती है।

7. सर्वविघ्ननाश एवं भूत-प्रेतजन्य पीड़ा निवृत्ति के लिये-

सर्वविघ्नविनाशाय ॐ शबलायै नमो जपेत्।
भूतप्रेतकृतापीड़ा विनश्यत्याशु वै ध्रुवम् ।।

सब प्रकार के विघ्ननाश के लिये 'ॐ शबलायै नमः' इस मन्त्र का जप करना चाहिये । इसके जप से भूत-प्रेतजन्य पीड़ा भी निश्चित रूप से अतिशीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

8. विशिष्ट मेधा प्राप्ति के लिये-

गां नत्वैव पिबेत्क्षीरं विद्यादात्र्यै गवे नमः ।
जपित्वाऽध्ययनं कुर्याद्विद्यार्थी ज्ञानवान् भवेत्।।

विद्या चाहने वाले गो को प्रणाम कर नित्य ही गोदुग्ध का पान करे और 'विद्यादात्र्यै गवे नमः' इस मन्त्र का जप करने के बाद अध्ययन करे तो वह ज्ञानवान् होता है ।

9. सब कार्यो में सफलता एवं दृढ गोभक्ति के लिये-

सर्वदा सर्वकार्येषु गोगौरित्युच्चरेद् बुधः।
साफल्यं निश्चितं तस्य गोभक्तिश्च दृढा भवेत्

सर्वदा सभी कार्यो में बुद्धिमान् 'गौः गौः' का उच्चारण करे, इससे निश्चय ही उसके सारे कार्य सफल होते हैं और गौके प्रति दृढ़भक्ति भी होती है।

10. सभी कर्मो में अधिकार प्राप्ति के लिये–

गोवन्दनं विधायैव पंचगव्यस्य भक्षणम् ।
कुर्यान्नरः शुचिर्भूत्वा सर्वकर्माणि कारयेत् ।।

गो की वन्दना करनेके बाद पंचगव्य का पान करके मनुष्य पवित्र हो सभी कर्मो को प्रारम्भ करे ।

11. अहोरात्रजन्य पापनाश के लिये–

यो गोरजःपुरीषेण तिलकं कुरुते नरः।
अहोरात्रकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ।।

जो मनुष्य गोरज अथवा गोबर से नित्य तिलक करता है, उसके दिन एवं रात्रि के किये हुए सारे पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं बशर्ते कि वह पुनः वो पाप न करने का संकल्प करे।

12. ग्रह पीड़ा के निवारण के लिये–

नित्यं गोग्रासदानेन गोरजश्चन्दनेन च ।
पंचगव्यस्य पानेन ग्रहपीडां निवारयेत् ।।

नित्य गोग्रास के प्रदान करने से, गोरज का चन्दन लगाने से और शुद्ध पंचगव्य का पान करने से ग्रहजन्य पीड़ा का निवारण होता है।

13. बालारिष्ट की शान्ति के लिये–

कज्जलं गोघृतो ूतं तिलकं गोमयेन च ।
गोपुच्छभ्रामणं कुर्याद्बालारिष्टप्रशान्तये ।।

बच्चों की अरिष्ट शान्ति के लिये गोघृत से निर्मित काजल लगायें, गोबर का तिलक करें और उनके ऊपर गोपुच्छ को घुमायें ।

14. विवाहहेतु सुयोग्यवर अथवा कुलीनकन्याप्राप्तिहेतु–

गोघृतज्वलितां वर्ती गव्यदीपे गवालये ।
तुलसीमूले गोमये वा दद्यादुद्वाहसिद्धये ।।

विवाह हेतु सुयोग्य वर अथवा कुलीन कन्या प्राप्ति हेतु गो के गोबर से बने दीप में गोघृत युक्त रूई जलाकर गोष्ठ में तुलसी के पास या गोबर के पुंज पर रखे ।

गोनीराजनम्

(दीप जलाकर गो की आरती)

साभार : गवार्चनप्रयोगः

गोमातः करुणामयि भगवति कुर्वे ते नीराजनम्।
जय जय मनोरमे सुरभे हे कुर्वे ते नीराजनम् ।1।
भवभयहारिणि दैत्यविदारिणि दुःखविनाशिनि सौख्यप्रदे।
तव चरणे प्रणतोऽस्मि सदाऽहं कुर्वे ते नीराजनम् ।2।
देवमुनिप्रवरप्रतिपालिनि सृष्टिस्थितिसंहारकारिणि।
श्यामे सनातने नन्दिनि हे कुर्वे ते नीराजनम् ।3।
श्रीमति ब्रह्मसुते वृषभामिनि गवामम्ब गोलोकनिवासिनि।
जगज्जननि हे जनकल्याणि कुर्वे ते नीराजनम् ।4।
रुद्रजननि वसुपुत्रि पयस्विनि सुधार्णवे आदित्यभगिनि हे
दुग्धमुखो दीनो बालोऽहं कुर्वे ते नीराजनम् ।5।

हे करुणामयि! भगवति! गोमातः! मैं तुम्हारा नीराजन करता हूँ। हे मनोरमे! सुरभे! तुम्हारी जय हो, जय हो। मैं तुम्हारा नीराजन करता हूँ ।।1।

हे संसारके भयका हरण करनेवाली, दैत्योंका विदारण करनेवाली, दुःखोंका विनाश करनेवाली और सम्पूर्ण भोगोंको प्रदान करनेवाली मैं तुम्हारे चरणोंमें नतमस्तक होकर तुम्हारा नीराजन करता हूँ ।2।

हे देवताओं और मुनियोंका सर्वोत्तमपालन करनेवाली, सृष्टि, स्थिति और संहार करनेवाली श्यामे! सनातने! और नन्दिनि! मैं तुम्हारा नीराजन करता हूँ ।3।

हे श्रीमति! ब्रह्मसुते! वृषभामिनि! गोलोकमें निवास करनेवाली, संसारका कल्याण करनेवाली, सम्पूर्ण गोवंश और जगत्की माता सुरभे! मैं तुम्हारा नीराजन करता हूँ ।4।

हे रुद्रोंकी जननी, वसुओंकी सुता, आदित्यकी बहन, दुग्धादिको धारण करनेवाली और अमृतका समुद्र प्रवाहित करनेवाली गोमाता! मैं दुग्धमुख दीनबालक तुम्हारा नीराजन करता हूँ ।5।

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। भगवान के यशोगान जहाँ होते हों वहाँ जाकर बैठ जाओ, आपकी भलाई उसी पल हो जायेगी। जहाँ रामजी की कथा के जंगल लगाये गये हों उस घोर जंगल में बैठकर अपने आत्म कल्याण को साधें। इसमें दो महात्मा का नाम आया ये दोनों जंगल में ही रहते हैं। घोर जंगल में रहते हैं। ये जो वनस्पति के जंगल बताये इनमें नहीं रहते, तो कहाँ रहते हैं? वे सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्य में रहते है। इस पुण्य वन में ये दोनों घूमते-फिरते हैं, विहार करते हैं।

ये दोनों कौन? **वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ।।** एक कविश्वर जिनका नाम श्रीमद बाल्मीकि भगवान है और दूसरे कपिश्वर जिनका नाम श्रीमद भगवान हनुमानजी महाराज है। इन कविश्वर और कपिश्वर को श्री सीताराम वन के अलावा आज तक कोई दूसरा वन दिख नहीं। हनुमानजी ढूढ़ने से शायद किसी जंगल में मिले, पर राम कथा में नजर आ जायेंगे- राम कथा सुनबै को रसिया। इसी वन में हम भी घूमना चाहेंगे जहाँ मेरे सीतारामजी विहरण करते हैं, हनुमानजी विहरण करते हैं, श्रीमद वाल्मीकि भगवान विहरण करते हैं जिनकी गाथा हम गा रहे हैं। हम गृहस्थियों को भी कभी वन में जाना हो तो ऐसे वन में मत जाना जहाँ रोटी के लाले पड़ जाए। जाना श्री सीतारामजी के कथा वन में जहाँ सबकी अनुकूलता हमें प्राप्त हो। बोलो नंदनंदन भगवान की जय! श्री कौशल्यानंदन भगवान की जय।

आईये! माता जानकी का पक्ष आया। क्या हैं वो? बाबा तुलसी ने मंगलाचरण में सम्पूर्ण प्रतिपादित विषयों को सांकेतिक प्रकाशन किया है।

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और संहार करने वाली, क्लेशों को हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों को करने वाली श्री रामचन्द्रजी की प्रियतमा श्री सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

ध्यान दीजिये- इसका एक-एक शब्द हमारे जीवन में काम लेने योग्य है। उद्भव करने वाली माँ है। जानकीजू सृष्टि का उद्भव करती है, प्रकाशन करती है, उत्पत्ति करती है संसार की। स्थिति माने पालन, लालन-पालन करती है संसार का। संहारकारिणी मतलब जैसे फसल पकने के बाद किसान अपनी फसल को काट देता है ऐसे ही संसार के बूढ़े होने पर, विश्राम की अवस्था प्रकृति में आने पर उसे समेट लेती है, संहार कर लेती है।

उत्पन्न करने वाली, पालन पौषण करने वाली और संहार करने वाली माँ है सीताजी। कहा इन तीनों बातों से हमारा कोई वास्ता नहीं है, कोई लेनादेना नहीं है। क्योंकि जन्म होना था वो गया, लालन-पालन हो ही रहा है और जब मृत्यु होनी होगी तब हो जायेगी, पर इन तीनों से हटकर हमारे लिये क्या है? संसार में हम सुख से रहें- क्लेशहारिणी। माँ सीताजी क्लेशों का हरण करती है। जीव जब रामजी के सन्मुख आ जाय तो उनके क्लेशों का हरण करती है। इतना ही नहीं हमारे मन में अभिष्ट है- इतना लाभ हो, इतना सुख हो, ये प्राप्त हो, वो प्राप्त हो, हमारे जीवन में ऐसा हो जाय आदि आदि। जीव श्रेयस कामना करता है कि हमारे जीवन में ऐसा हो, यह सुख हो तो माँ जानकी **सर्वश्रेयस्करीं सीतां।** एक नहीं, दो नहीं, दस नहीं, सौ नहीं, सर्व श्रेयसकरीं सीतां, एक से एक बढ़कर श्रेष्ठतम कल्याण को प्रदान करने वाली माँ जानकी है। सर्वश्रेयश्करीं-

श्रेयस, श्रेयस, श्रेयस, कल्याणकारी, कल्याणकारी, कल्याणकारी जितनी भी मान्यताएं हैं, जितने भी मनोरथ हैं, उन सबको पूरा करने वाली माँ ललिजू, माँ जानकी हैं। कहा-**नतोऽहं रामवल्लभाम्।** उन श्रीरामचंद्रजी की प्रियतमा श्री सीताजी को हम प्रणाम करते हैं।

अब आईये! सबकी पूजा हुई। जिनकी लीला में हम प्रवेश करेंगे, वे कैसे भगवान हमारे हैं। वे अपना नाम पहले आने ही नहीं देते हैं। सबकी पूजा हो गई, सबका मान वर्धन किया तब उनका नाम आ रहा है। आपने कभी पूजा की है क्या? हम कर्मकाण्ड में रोज करते हैं, उस पर कोई गौर किया है कभी? कोई विशेषता नजर में हो तो। हम लोग देवी की पूजा करें, हम लोग शिवजी की पूजा करें, हम लोग विष्णु की पूजा करें, हम लोग अनेकों रूपों में भगवान की पूजा करें उन पूजा में एक विशेषता आपके ध्यान में आवे? बताओ क्या विशेषता होती है? उन सब में एक प्रधान देवता होते हैं। प्रत्येक कर्मकांड के एक प्रधान देव होते हैं।

अभी जो रामायणजी का है हमारे श्री सीताराम जी प्रधान देवता हैं इस समय। भागवत चरित्र में तो राधा गोविंद हमारे प्रधान देवता होंगे। शिवजी की अर्चा पूजा सेवा अभिषेक आदि करावें तो भोलेनाथ भवानी प्रधान देवता हो जाएंगे। गणपति जग में गणपति प्रधान होंगे एवं प्रकार से एक प्रधान देवता होते हैं, पर ध्यान रहे जो प्रधान देवता होते हैं उनको बहुत धीरज रखना पड़ता है। ऐसे ही अपने-अपने घर में जो प्रधान देवता हैं उनको बहुत धैर्यवान होने की आवश्यकता है। प्रधान देवता बहुत धैर्यवान होते हैं।

आपने देखा होगा कि सीधे आसन पर बैठे रामजी की पूजा किसी ने की है क्या? अब देखिए आसन शोधन के बाद स्वस्ती वाचन, संकल्प आदि के बाद गणपति भगवान की पूजा, अब देखिए कलश भगवान की पूजा, गौरी माता की पूजा, नवग्रह भगवान की पूजा, 10 दिग्पाल, पांच लोकपाल की पूजा, ओमकार आदि अनेकों देवों की पूजा, फिर मंडल अनेक उनकी पूजा, जब सब देवता पूजित हो गए तो राम जी देखते हैं कोई बाकी तो नहीं रह गया? देख लेते हैं। सबसे अंत में फिर प्रधान पीठ पर विराजमान श्री राधा गोविंद, श्री सीताराम जी की पूजा करते हैं। तो प्रधान देवता पीछे पूजते हैं। यही तो उनकी प्रधानता है, यही तो उनकी दिव्यता है। पहले पूजा आपकी हो जाए तो प्रधान आप नहीं बन पाएंगे। बोलो भक्त वत्सल भगवान जय।

इसलिये गृहस्थी में भी हिम्मत करो। पहले सबको सुखी करो। इनको सुखी, इनको सुखी, इनका मन, इनका मन, इनका मन, सब की सेवा, मनोकामनाएं सब की इच्छाएं, सबके मनोरथ, सब की अभिलाषाओं की एकदम पूर्ति करते करते फिर अपनी भी बारी आवे। धीरज रखो तो आप प्रधान देवता बन जाएंगे क्योंकि सबसे पीछे पाया। तो गहस्थी के निर्वाह में भी प्रधान देवता, जो दंपति है घर चलाने वाले वे धीरज रखें। अपने किसी भी सुख को पीछे कर दें, परिवार चलाने में सबको आगे-आगे रखे, वह प्रधान देवता होते हैं।

मेरे रामजी ने सबका मान कराया, सबका वंदन कराया, अब आपका नाम सामने लाया तो अब भगवान श्री रामजी की गाथा होगी। रामजी कौन है? रामजी की कथा में रामजी का चरित्र वर्णन हम करें तो विस्तार से गाथा होगी वहाँ बात पकड़ में नहीं आएगी कि रामजी कौन हैं? पर तुलसी बाबा ने सूत्र लिखा, मर्म लिखा इस मर्म से चलिए कि रामजी कौन है? कहा रामजी को जानने के लिए यहाँ एक श्लोक काफी है। इससे ज्यादा पढ़ने की जरूरत जीवन में नहीं पड़ेगी। मानसकार ने कहीं कमजोर नहीं लिखा कि दोहराना भी पड़े। बस एक ही मंत्र हमारे लिए बहुत से बहुत होगा राम तत्व जानने के लिए। भगवान राम क्या है?

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।।

जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य जगत सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिए एकमात्र नौका हैं, उन समस्त कारणों से पर (सब कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ) राम कहलाने वाले भगवान हरि की मैं वंदना करता हूँ।

रामाख्यमीशं हरिम्- हम हरि की वंदना करते हैं। कौन से हरि की? जो इस समय श्री रामजी के रूप में प्रकट हुए। हम वंदना हरि की करते हैं, नारायण की करते हैं, पर इस समय वह राम रूप में प्रकट है। तो राम आख्यम ईशम् हरिम्- जो ईश्वर, जो हरि जो इस समय अवतार लेकर राम जी बनकर आए हैं, जो राम रूप में प्रकट हुए प्रभु का हम, प्रभु के राम नाम का वंदन करते हैं। तो यह राम जी कैसे हैं? जो हरि, जो ईश्वर राम रूप में अवतरित हुए हैं उनकी प्रभुता क्या है?

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं- कहा, अखिल विश्वं का मतलब सारा विश्व तो एक ही हुआ, विश्व कहने से यह एक विश्व हो चुका। विश्व हम कह दिए तो अखिल हो गया, अब जो वर्तमान विश्व में हम निवास करते हैं इस विश्व का नाम केवल विश्व कहने से पूर्ण हो गया तो फिर अखिल विश्व कहने की क्या जरूरत पड़ी? पर वास्तव में विश्व एक नहीं है, अनंत विश्व है।

देखरावा मातहि निज अद्‌भुत रूप अखण्ड।
रोम-रोम प्रति लागे कोटि-कोटि ब्रह्मांड।।

फिर जिन्होंने माता को अपना अखण्ड अद्‌भुत रूप दिखलाया, जिसके एक-एक रोम में करोड़ों ब्रह्मांड हैं। सोचो, जिनके रोम-रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड होंगे तो विश्व कितने हो जाएंगे? इसलिए कहा गया अखिल विश्व में। केवल यही विश्व नहीं जिसमें हम रहते हैं, ऐसे अनंत विश्व जिन परमात्मा के माया के वशीभूत होकर पल रहे हो, कहा केवल विश्व ही नहीं ब्रह्मादि देवता, असुर आदि जिनके माया के अधीन है, जिनके तंत्र के अधीन है, जिनकी सत्ता और शासन के अधीन है वे भगवान राम हैं।

उन परमात्मा की सत्ता और सत्यता के कारण यह सारा विश्व सत्यभासित हो रहा है जैसे रस्सी में सांप की भ्रांति होती है। सांप है नहीं पर रस्सी के टेढ़े होने के कारण रस्सी में सांप की भ्रांति होती है। ऐसे ही जगत की सत्ता नहीं है, पर परमात्मा की सत्ता के कारण वो सत्य प्रतीत हो रहा है।

अभी गंगा के किनारे हम सब आए हैं। शाम में जब भी दीप माला व आरती आदि मां गंगा की हम देखें उस समय आप क्या पाएंगे? अभी चंद्रमा प्रकट हो जाने दीजिए तो आज तो गंगा की धारा में चंद्रमा का दर्शन होगा। अब इस विचार करें कि चंद्रमा है कहाँ? हम डुबकी लगाकर चले जाएं चंद्रमा को पकड़ने तो चंद्रमा हाथ नहीं आएगा, पर गंगा की धारा में चंद्रमा दिखेगा अवश्य। आखिर है क्या? चंद्रमा नहीं है क्या? कहा जिसका प्रतिबिंब है उसका कोई बिंब अवश्य होगा। छाया कॉपी किसकी होती है? मूल की होती है ना। अगर मूल प्रति ना हो तो प्रतिबिंब (छाया) कहाँ से होगी।

इसी प्रकार गंगाजी में चंद्रमा की छाया दिख रही है तो विश्वास करना पड़ेगा कि चंद्रमा भी कहीं ना कहीं तो होगा। अगर उसी समय आकाश की ओर देखेंगे तो आकाश में चंद्रमा का स्वरूप दिखाई देगा और उसी चंद्रमा का प्रतिबिंब गंगा की प्रवाह में हमें दिखाई देगा। इसका मतलब हुआ चंद्रमा सत है और सत के प्रभाव से गंगाजल में दिखने वाला चंद्रमा का प्रतिबिंब भी सत है।........शेष अगले अंक में

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

तो यमदूतों ने कहा यह पवित्र कैसे हो गया? देवराज नाम का यह चरित्रहीन ब्राह्मण, पतित ब्राह्मण पवित्र कैसे हो गया? तब शिव के पार्षदों ने कहा- सुनो मंदिर में से आवाज क्या आ रही है?

धन्य धन्य कथा शम्भोस्त्वं धन्यो धन्य एव च।
यदाकर्णनमात्रेण शिवलोकं वृजन्नरः।।

हे शम्भो (शिव), आपकी कथा धन्य है, आप धन्य हैं, और जो भी आपकी कथा सुनता है, वह भी धन्य हो जाता है, कथा कहने वाला धन्य है, क्योंकि आपकी कथा सुनने से ही मनुष्य शिवलोक को प्राप्त कर लेता है। आप सोच रहे होंगे कथा करवाने वालों का कुछ नहीं कहा। तो कथा करवाई है, सुनी नहीं है तो केवल आपका धन धन्य है, आपका धन पवित्र हुआ है। आप तो कथा सुनने पर ही पवित्र होगं। आप तो धन्य हो ही क्योंकि कथा करवाने के साथ-साथ आप कथा सुन भी रहे हैं, तब सब धन्य है।

भैया कथा करने वाले तो सोचते हैं कि हमने कथा कराई, धन्य हो गए हम। तो मेरे भाई-बहन माफ करिएगा कथा के आयोजक बनने से आपकी संपत्ति धन्य हुई है। लीजिये मेरा अमुक गाड़ी चारा, अमुक शेड मेरी ओर से, यह तो आपने धन धोया है और वो धन आपके काम लेने जैसा हुआ है, इसमें कोई बड़ी बात नहीं, माफ करना भाइयों, आप कहोगे कि एक तरफ तो दुपट्टे पहनाते हो, नाम लेते हो और दूसरी तरफ एकदम ऐसी बात बोल रहे हो! सच्ची बात है, माफ करियेगा। करें क्या, बच्चे जैसे हो सब। बच्चों को नहलाने के लिए भी उसको पटाना पड़ता है जबकि नहाने से तो उसी का ही भला है, उसी के शरीर की गंदगी मिटेगी, वही स्वस्थ होगा, स्वच्छ दिखेगा, सुंदर दिखेगा और उसके लिये भी माँ को कहना पड़ता है कि नहायेगा तो मैं तुझे लड्डू दूंगी नहायेगा तो मैं तुझे खिलोने दूंगी। यह विडम्बना है। यह तो धन धोया है। वास्तविक धन्यता तो तब है जब आप भी श्रोता बनकर बैठो, सुनो।

यहाँ की शिव महापुराण कथा की एक सूचना पड़ी थी मोबाइल में जो आपके यहाँ की आई थी मुझे बहुत अच्छी लगी। उसका पालन आज तो नहीं हुआ है शायद पहला दिन है इसलिये। शायद कल से हो जाय। उसमें यह लिखा हुआ था कि आयोजक आदि जो भी मुख्य स्त्रोता हैं उनके लिये आगे बैठने के लिये पास की व्यवस्था हो और वो भी सिर्फ 4 बजे तक रहे। 4 बजे तक अगर आपने आकर अपनी जगह ले ली तो आपकी वह जगह है नहीं आएंगे तो फिर जो आएगा वह बैठेगा फिर आप कहना मत कि हमारी जगह थी, अब हम कहाँ बैठें? फिर तो पास है तो पास में बैठो, देरी से आने वालों को वो वी.आई.पी. सीट नहीं मिलेगी।

ऐसा क्यों? क्योंकि आयोजकों को अहंकार नहीं हो जावे। नहीं तो आयोजक प्रमाद करेगा। घर पर कोई कहेगा, ऑफिस में कोई पूछेगा अरे आप गये नहीं कथा का तो समय हो गया? तो कहोगे अपने पास पास है, कभी जाओ सीट आरक्षित रहती है हमारे लिये। यह पास का अहंकार हो गया ना। यह अहंकार न हो इसलिये उसमें लिखा है 4 बजे तक पास है नहीं तो फिर दूर है। तो इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है कि आयोजक भी अपने आपको श्रोता अनुभव करें कि भाई मुझे भी सुनना है और स्त्रोता बननो है तो ऐसा करना पड़ेगा। नहीं तो सोचेगा, अपना क्या है, अपना तो वैसे भी कल्याण होने वाला है क्योंकि हम तो कथा करवा रहे हैं ना।

इसलिये ध्यान दीजिये- शौनक जी महाराज

कह रहे हैं-

धन्य धन्य कथा शम्भोस्त्वं धन्यो धन्य एव च कथा धन्य है, कथा सुनने वाले स्त्रोता धन्य है, कथा कहने वाला धन्य है, कथा के आयोजक होकर के साथ में श्रवण करने वाले धन्य है। **यदाकर्णनमात्रेण शिवलोकं वृजन्नरः** - सिर्फ शिव कथा का संबंध जिसके कानों से हो जाता है, सिर्फ कथा का संबंध अर्थात् कथा कानों में चली गई उसी से प्राणी शिव लोक का अधिकारी हो जाता है। यदा कर्णन मात्रेण शिव लोकं वृजन्नर। सिर्फ कानों के साथ कथा का संबंध हो गया उसी से आप शिव लोक के अधिकारी हो जायेंगे। यमदूतों ने कहा हमको क्या समझना चाहिए? बोले जो हम कह रहे हैं वही समझना चाहिए। है यह पापी, दुराचारी, सब अवगुण इसमें है पर एक महीने से यह पड़ा है शिव मंदिर के बाहर, इसको कुछ नहीं मिल रहा है पर पड़े-पड़े इसके कान में शिव कथा पहुंच रही है। इसीलिए यह शिव लोक जाने का अधिकारी है। यह शिव मंदिर के बाहर पड़-पड़ा शिव कथा सुनता रहा।

भिखारी तो भैया सब तीर्थो में मिलते ही हैं पर मुझे वृन्दावन के भिाखारी ज्यादा अच्छे लगते हैं। क्यों अच्छे लगते हैं? भैया भीख मांगने के लिए ही सही वे राधे-राधे कहते हैं और राधे-राधे सुनते हैं। करुणानिधान! भले ही यह महिने भर से पड़ा है पर पड़े-पड़े ही इसके कान में शिव कथा गई है। इसलिये यह शिवलोक का अधिकारी हो गया है। करूणानिधान! ऐसी यह शिव महापुराण की अद्‌भुद महिमा है।

करुणानिधान! करुणानिधान! शिव कथा से शुद्धि होती है। कैसे होती है? एक बहुत ही अलग सा शब्द महाराज जी शिव महापुराण में कहा गया है जो शब्द कभी सुनने में नहीं आता है। शब्द क्या है- कुकथा। कथा शब्द तो हम सबने सुना है, पर कुकथा शब्द सुनने में नहीं आता है। सब लोग सावधानी से सुनो भैया कुकथा क्या होती है? मोबाइल प्रेमी भी सुनो और बातों के प्रेमी भी सुनो। बातों के प्रेमी है बहुत से मनुष्य। क्या कर रहे हो बोले कि बातें कर रहे है।

मोंगो जीवन खोयो, बस वातों-वातों मा।
वाणी दी वितम ने हरि गुण गावों,
वाणी दी वितम ने हरि गुण गावों,
पण वातों वातों में बधो खोयो, ओ मोंगो जीवन,
वातों-वातों में।
पाछो आवी ने नहीं जाव्यो, ओ मोंगो जीवन,
वातों-वातों मा...
अरे हाथ दिया छे तमने दान ज करवा
हाथ दिया छे तमने दान ज करवा
पर घर धन्धा मा बधो खोयो, ओ मोंगो जीवन,
वातों-वातों मा .....
पग जो दिया छे तमने जातरा करवा,
पग जो दिया छे तमने जातरा करवा,
पर फरवा-फरवा मा बधो खोयो ओ मोंगो जीवन,
वातों-वातों मा.....

पैर दिये आपको बृज की यात्रा करने के लिये, अवध की यात्रा करने के लिये, काशी की यात्रा करने के लिये, हरिद्वार और ऋषिकेष की यात्रा करने के लिये, पर तुमने कहाँ की यात्रा की? तुम पेरिस गये, स्विट्जरलैंड गये, लंदन गये, न्युयार्क गये। अरे भाई हरिद्वार जावानो छे सबने, तेरी तैयारी करवानी छे। एक बार सो ने हरिद्वार जावा नो छे।

तो भाई बहुत अलग सा शब्द मैंने पहली बार पढ़ा कुकथा। कुकथा किसको कहते हैं? कुकथा का सबसे पहला अर्थ सुनिए आपको थोड़ा अटपटा लगेगा, लेकिन कोई बात नहीं शिव कथा है यह तो अटपटे ठाकुर जी की कथा है ना। हमारे भोलेनाथ अटपटे तो हैं, कौन समझ पाता है। तो उनके जो ईस्ट हैं श्री हरि वह भी अटपटे हैं। तो अटपटों की यह सब बात है। जो भी बात आपका ध्यान कथा से हटाती है वह कुकथा है। फिर भले ही बगल वाला कहे कि

आज भोजन में हलवा पूरी बनी है। भले ही बगल वाला तुमको कहे कि उनका लड़का इतने नंबर से पास हो गया है। अरे तुमको पता है उनकी बेटी की सगाई हो गई है, जो भी बात आपका ध्यान कथा से हटाती है वह सब कुकथा है।

कृपानाथ ध्यान दीजिएगा वह कुकथा सुनने से व्यक्ति की बुद्धि जो है वह पशु बुद्धि हो जाती है। सूतजी महाराज कहते हैं- कुकथा सुनते हैं उनकी बुद्धि पशु बुद्धि हो जाती है। बुरा मत मानना हमको झूठा खाने में बिल्कुल भी विचार क्यों नहीं होता है। माफ करना आप लोगों के लिए नहीं कह रहे हैं, आप लोग तो बहुत ही आचार-विचार वाले हैं मैं तो जानता हूँ ना। तो एक बात बता रहा हूँ, केक नाम का पदार्थ खाते हैं ना लोग जन्मदिन पर एक थोड़ा सा टुकड़ा लेंगे, उसे पहले एक खायेगा, फिर दूसरे को देगा ऐसे पांच जने खाएंगे उसी जूठे को क्योंकि पशु बुद्धि हो गई है। इसलिए इस बात का विचार ही नहीं आता।

राम-राम कैसे खाते हैं लोग एक-दूसरे का जूठा, मेरे तो समझ में भी नहीं आती है बात। मैंने तो देखा है ना भाई। मैं शामिल नहीं होता लेकिन देख तो लेता हूँ। सभ्य माने जाते हैं, बुद्धिजीवी माने जाते हैं, श्रेष्ठ माने जाते हैं, बड़े माने जाते हैं, किस प्रकार से बड़े हैं भगवान जाने और वे जाने। ऐसा कौन करता है, कौन कर सकता है? करते समय विचार ही नहीं आता है? क्योंकि पशु बुद्धि हो गई है और पशु बुद्धि क्यों हो गई है? भैया, कुकथा सुनने से पशु बुद्धि हो गई है। जो लोग कथा सुनते हैं, उनमें आचार-विचार प्रतिष्ठित होते हैं, वे लोग इस प्रकार का यह नहीं कर सकते। यह पशु व्यवहार वे नहीं कर सकते। अब आप देखो मैं अभी एक मिनट के लिए चुप हो जाता हूँ। आप कुछ अनुभव करेंगे। देखो आप सब चुप रहे, कोई नहीं बात कर रहा है। ठीक है बच्चे बेचारे, बच्चे तो बच्चे हैं क्या करें, किन्तु ऊपर भी देखो इतनी माताएं-बहनें हैं, भाई लोग बैठे हैं, नीचे भी आप इतने माताएं-बहनें, भाई लोग बैठे हैं लेकिन सब शांत, कोई बातें नहीं कर रहे हैं। क्यों? क्योंकि आपको कथा का महत्व पता है। आपको यह बात ध्यान में है कि हमें जो बातें आपस में करनी है इसके लिए हमें बाद में बहुत अवकाश मिलने वाला है, लेकिन यहाँ सुनते समय कोई बात चूक गए तो वह कोशिश करने पर भी दोबारा मिलने वाली नहीं है।

कृपानाथ जो भी बात हमको कथा से अलग करती है वह कुकथा है। बुरा मत मानना, भले ही किसी के ब्याह में गीत गाने गए आप, किसी की शादी में आईटी खाने गए आप कथा छोड़कर, वहाँ भले कितना ही मनोरंजन हो रहा है, मंगल गीत गाए जा रहे हैं, पर आपके लिए तो वह कुकथा है। क्यों? क्योंकि उसके कारण आपकी कथा छूट गई और कुकथा के प्रभाव से क्या होता है? पशु बुद्धि होती है और ध्यान दीजिए सिर्फ यहाँ पर ही नहीं है चाहे आप अपने घर में भी हो, आप अपने मित्रों से मिलते हो, माताएं-बहनें अपनी सहेलियों से भी मिले और वहाँ भी अगर व्यर्थ की चर्चा होती है, विषयों की चर्चा होती है तो वह सब कुकथा है।

इसलिए कोई भक्त किसी भक्त को ही क्यों मित्र बनाता है? वह इसलिये कि भक्त के साथ भक्त का संबंध होगा तो आपस में भक्ति की ही चर्चाएं होगी तो कम से कम कुकथा सुनने को नहीं मिलेगी। अगर भक्त किसी संसारी के साथ अधिक संपर्क में रहेगा तो बात-बात में आकर कहेगा कि तुझे पता है कि वहाँ ऐसी-ऐसी घटनाएं घट गई, वहाँ यह हो गया, उसके वहाँ ऐसा हो गया आदि आदि। वह संसारी व्यक्ति भक्त को कुकथा ही सुनायेगा, उसके पास कथा की बातें कहाँ? वह कुकथा सुना-सुनाकर भक्त के हृदय को, उसकी बुद्धि को पशु बुद्धि बना देंगा और अगर वैष्णव का संग होगा, भक्तों का संग होगा तो हरि कथा सुनाकर, हर की कथा सुनाकर आपकी बुद्धि को भागवत बुद्धि बना देंगे।.........शेष अगले अंक में

परमपद

(जीव का अपना असली घर)

साभार : गीता साधक संजीवनी

पिछले अंक से आगे......

गीता में भगवान् ने राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों से मुक्त होने का बड़ा सुगम उपाय बताया है कि अनुकूलता -प्रतिकूलता में राग-द्वेष छिपे हुए हैं। उनसे बचने के लिये साधक को केवल इतनी सावधानी रखनी है कि वह इनके वश में न हो (गीता 3/34)। तात्पर्य यह है कि राग-द्वेष दीखने पर भी साधक इनके वशीभूत होकर तदनुसार क्रिया न करे, क्योंकि क्रिया करने से ही ये पुष्ट होते हैं।

गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्- आने-जाने वाले पदार्थो को प्राप्त करने की इच्छा या चेष्टा करना तथा उनसे सुखी-दु:खी होना 'मूढ़ता' है। वास्तव में संसार निरन्तर परिवर्तनशील है और परमात्मा नित्य रहने वाला है। परमात्मा की सत्ता से ही संसार की सत्ता दीखती है। परन्तु अविनाशी परमात्मा और विनाशी संसार की सत्ता को मिलाकर 'संसार है' ऐसा मान लेना 'मूढ़ता' है।

जिस प्रकार मूढ़ (अज्ञानी) मनुष्यों को 'संसार है' ऐसा स्पष्ट दिखायी देता है, उसी प्रकार अमूढ़ (मोहरहित) भक्तों को 'परमात्मा है' ऐसा स्पष्ट अनुभव होता है। संसार जैसा दिखायी देता है, वैसा ही हैं इस प्रकार संसार को स्थायी मान लेना 'मूढ़ता' (मोह) है। जिनकी यह मूढ़ता चली गयी, उन भक्तों को यहाँ 'अमूढा:' कहा गया है। मूढ़ता चले जाने के बाद सुख-दु:ख का असर नहीं पड़ता। जिस पर सुख-दु:ख आदि द्वन्द्वों का असर नहीं पड़ता, वह मुक्ति का पात्र होता है (गीता दूसरे अध्याय का पन्द्रहवाँ श्लोक)। इसीलिये इस श्लोक में भगवान् ने दो बार मूढ़ता के त्याग की बात (निर्मानमोहा:' और अमूढा:') कहकर मूढ़ता के त्याग पर विशेष जोर दिया है।

मूढ़ता अर्थात् मोह दो प्रकार का होता हैं- (1) परमात्मा की ओर न लगकर संसार में ही लग जाना और (2) परमात्मा को ठीक तरह से न जानना। इस श्लोक में पहले 'निर्मानमोहा:' पद से संसार का मोह चले जाने की बात कही है और यहाँ 'अमूढा:' पद से परमात्मा को ठीक तरह से जान लेने की बात कही है।

जिस परमात्मा को इसी अध्याय के पहले श्लोक में 'ऊर्ध्वमूलम्' पद से कहा गया तथा जिस परमपद रूप परमात्मा की खोज करने के लिये चौथे श्लोक में प्रेरणा की गयी और आगे छठे श्लोक में जिसकी महिमा का वर्णन किया गया है, उसी परमात्मरूप **परमपद** को यहाँ 'अव्ययम् पदम्' कहा है। जो ऊँची स्थिति के साधक भक्त मान, मोह, ममता आदि दोषों से सर्वथा रहित हो जाते हैं, वे उस अविनाशी **परमपद** (जीव के अपने असली घर) को अवश्य प्राप्त होते हैं, जिसको प्राप्त कर लेने पर मनुष्य लौटकर नाशवान् संसार में नहीं आता।

वास्तव में तो मनुष्यमात्र उस पद को स्वत: प्राप्त है, पर उधर दृष्टि न रहने से उसको वैसा अनुभव नहीं होता। इसे एक उदाहरण से समझना चाहिये। हम रेलगाड़ी से यात्रा कर रहें हैं। हमारी गाड़ी एक स्टेशन पर रुक जाती है। हमारी गाड़ी के पास (दूसरी पटरीपर) खड़ी हुई दूसरी गाड़ी सहसा चलने लगती है। उस समय (उस चलती हुई गाड़ी पर दृष्टि रहने से) भ्रम से हमें अपनी गाड़ी चलती हुई दीखने लगती है। परन्तु जब हम वहाँ से अपनी दृष्टि हटाकर स्टेशन की तरफ देखते हैं, तब पता लगता है कि हमारी गाड़ी तो ज्यों-की-त्यों (अपने स्थानपर) खड़ी हुई है। इसी प्रकार संसार से सम्बन्ध होने पर मनुष्य अपने को संसार की तरह क्रियाशील (आने-जाने वाला) देखने लगता है। पर जब वह संसार से

दृष्टि हटाकर अपने स्वरूप को देखता है, तो उसको पता लगता है कि मैं स्वयं तो ज्यों-का-त्यों ही हूँ।

परिशिष्ट भाव:- ज्ञानयोग और कर्मयोग के अन्तर्गत भक्ति नहीं आती, पर भक्ति के अन्तर्गत ज्ञानयोग और कर्मयोग दोनों आ जाते हैं (गीता दसवें अध्याय का दसवाँ-ग्यारहवाँ श्लोक)। इसलिये यहाँ 'अध्यात्मनित्या:' पद से ज्ञानयोग और 'विनिवृत्तकामा:' पद से कर्मयोग ले सकते हैं।

संबंध: पूर्व श्लोक में वर्णित जिस अविनाशी पद को भक्त लोग प्राप्त होते हैं, वह अविनाशी पद कैसा हैं, इसका भगवान् विवेचन करते हैं।

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावक:।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

उस परमपद को न सूर्य, न चन्द्र और न अग्नि ही प्रकाशित कर सकती है और जिसको प्राप्त होकर जीव लौटकर संसार में नहीं आते, वही मेरा परम धाम है।

इन श्लोकों में भगवान् यह बताते हैं कि वह अविनाशी पद मेरा ही धाम है, जो मेरे से अभिन्न है और जीव भी मेरा अंश होने के कारण मेरे से अभिन्न है। अत: जीव की भी उस धाम (अविनाशी पद) से अभिन्नता है अर्थात् वह उस धाम को नित्यप्राप्त है।

इस श्लोक में भगवान् ने दो खास बातें बतायी हैं (1) उस धाम को सूर्यादि प्रकाशित नहीं कर सकते और (2) उस धाम को प्राप्त हुए जीव पुन: लौटकर संसार में नहीं आते, वो जीव का अपना असली घर (धाम) है।

'न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावक: दृश्य जगत् में सूर्य के समान तेजस्वी, प्रकाशस्वरूप कोई चीज नहीं है। वह सूर्य भी उस परमधाम को प्रकाशित करने में असमर्थ है, फिर सूर्यसे प्रकाशित होने वाले चन्द्र और अग्नि उसे प्रकाशित कर ही कैसे सकते हैं? सूर्य, चन्द्र और अग्नि में भगवान का ही तेज है। भगवान से ही प्रकाश पाकर ये भौतिक जगत् को प्रकाशित करते हैं। अत: जो उस परमात्मतत्त्व से प्रकाश पाते हैं, उनके द्वारा परमात्मस्वरूप परम धाम कैसे प्रकाशित हो सकता है? तात्पर्य यह है कि परमात्मतत्त्व चेतन है और सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि जड (प्राकृत) हैं। ये सूर्य, चन्द्र और अग्नि क्रमश: नेत्र, मन और वाणी को प्रकाशित करते हैं। ये तीनों (नेत्र, मन और वाणी) भी जड़ ही हैं। इसलिये नेत्रों से उस परमात्मतत्त्व को देखा नहीं जा सकता, मन से उसका चिन्तन नहीं किया जा सकता और वाणी से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि जड़ तत्त्व से चेतन परमात्मतत्त्व की अनुभूति नहीं हो सकती। वह चेतन (प्रकाशक) तत्त्व इन सभी प्रकाशित पदार्थो में सदा परिपूर्ण है। उस तत्त्व में अपनी प्रकाशकता का अभिमान नहीं है।

चेतन जीवात्मा भी परमात्मा का ही अंश होने के कारण 'स्वयं प्रकाशस्वरूप' है, अत: उसको भी जड़ पदार्थ (मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि) प्रकाशित नहीं कर सकते। मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि जड़ पदार्थो का उपयोग (भगवान के नाते दूसरों की सेवा करके) केवल जड़ता से सम्बन्ध-विच्छेद करने में ही है।

एक बात ध्यान देने की है कि यहाँ सूर्य को 'भगवान' या 'देव' की दृष्टि से न देखकर केवल प्रकाश करने वाले पदार्थो की दृष्टि से देखा गया है। तात्पर्य है कि सूर्य तैजस-तत्त्वों में श्रेष्ठ है, अत: यहाँ केवल सूर्य की बात नहीं, प्रत्युत चन्द्र आदि सभी तैजस-तत्त्वों की बात चल रही है।

'यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'- जीव परमात्मा का अंश है। वह जब तक अपने अंशी परमात्मा को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसका आवागमन नहीं मिट सकता मतलब वह अपने असली घर नहीं जा सकता। जैसे नदियों के जल को अपने अंशी समुद्र से मिलने पर ही स्थिरता मिलती है, ऐसे ही जीव को अपने अंशी परमात्मा से मिलने पर ही वास्तविक,..........शेष अगले अंक में

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

पिछले अंक से आगे.......

दोनों का जीवन फिर से थोड़ा व्यवस्थित हुआ ही था कि एक और मुसीबत टूट पड़ी। गोमाता गाड़ियों के सर्विस स्टेशन की पक्की नाली में गिर गई। प्रयास किया मगर निकल नहीं पाई। गोमाता रातभर नाली में ठण्ड से ठिठुरती रही। शिवा पास में ठण्ड मर रहा है खड़ा रो रहा है। हजारों लोग पास में से चलते गये पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। एक गोसेवक वहाँ से गुजरा, शिवा को रोता देखकर रूका, उसे लगा कि इसकी माँ नहीं है। बच्चा कुछ बता नहीं पा रहा है। गोसेवक ने जाकर देखा तो गोमाता गहरी नाली में खड़ी थरथर कांप रही है। गोसेवक ने अपने साथियों को बुलाकर गोमाता को बाहर निकाला और आग जलाकर उसे तपाया। बच्चा दूध पीने हेतु गोमाता के चिपक गया।

अगर हम गोसेवा करना चाहें तो पग-पग पर सेवा का अवसर प्रभु ने दिया है। हम जिस भी क्षेत्र में रहें, उस स्थान के गोवंश पर पूरा ध्यान केन्द्रित रखें। हम हमारा कोई भी कार्य करते हैं वो करते हुए वहाँ के गोवंश को संभालते रहें। गोमाता को हर समय हमारी जरूरत रहती है। भोजन-पानी तो उसे चाहिये ही, लेकिन मुसीबत में फसने पर उसको हमारी सख्त जरूरत रहती है। माना कि एक गोमाता सड़क किनारे पर ही ब्याय गई, वह अपने बछड़े को छोड़कर कहीं जा नहीं सकती। नन्हा बछड़ा अभी चल नहीं पा रहा है। ऐसे समय उसको भूख भी बहुत लगी है। तब हमें उसको गर्म दलिया बनाकर उसमें थोड़ा तेल, गुड़, अजवायन मिलाकर खिलाना चाहिये और सूखा चारा खिलाना चाहिये। अगर कोई दो दिन भी ऐसी परिस्थिति में गोमाता की सेवा कर दे तो उसे बहुत ही पुण्य की प्राप्ति होगी और गोमाता अमोघ आशीर्वाद देगी। निराश्रित गोवंश प्रतिदिन अनेकों कष्टों से घिरा रहता है। निराश्रित गोवंश को 24 घण्टे हमारे सहयोग की आवश्यकता रहती है।

एक दिन मैं कहीं जा रहा था तो सड़क के पास में एक गोमाता पेड़ से बंधी हुई दिखी। पास में घर था वहाँ एक लड़का खड़ा था उसको पूछा कि इस गोमाता को आपने बांधा है क्या? उसने कहा नहीं, यह हमारी गाय नहीं है। पता नहीं किसने बांधा है? दुष्ट लोगों में ऐसा प्रचलन है कि कोई गोवंश बार-बार खेत में आता है तो वे उसे रस्सी से किसी जगह मरने के लिये बांध कर छोड़ देते हैं। इसलिये कहीं पर भी कोई बंधा हुआ गोवंश संदेहास्पद लगे तो उसकी जांच किये बिना आगे नहीं बढ़ना चाहिये। मैंने पास में जाकर देखा तो उसके रस्सी की गांठ पेड़ में फंस हुई थी, इसलिये वो वहाँ बंध गई। पता नहीं वो कितने समय से बंधी हुई थी। कितनी भूखी-प्यासी रही होगी। रस्सी की गांठ निकालते ही वो मुक्त होकर रवाना हो गई।

एक दिन गोमाता और शिवा नहर की वितरिका के किनारे-किनारे घास चर रहे थे। पांव फिसलने से शिवा वितरिका में गिर गया और पानी में बह गया। थोड़ी ही दूरी पर खेत वालों ने अपने आवागमन के लिये पत्थर की पट्टी वितरीका के ऊपर डाल रखी थी उसमें जाकर शिवा की गर्दन फस गई। गोमाता भागकर गई लेकिन वह अपने लाडले को इस मुसीबत से निकालने में असमर्थ थी। रोने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकती। कुछ देर बाद एक राहगीर वहाँ से गुजरा, उसने देखा। पास में गया और देखा कि बछड़ा अभी जीवित है, बछड़े को उसने बाहर निकाला। वो तो भला आदमी था और रूककर देख लिया जिससे शिवा के प्राण बच गये वरना कुछ देर बाद डूबकर प्राण निकल जाते।

यूं तो कहते हैं कि बरसात गायों के लिये होती है, लेकिन शहर का गोवंश तो बरसात में त्राहि-त्राहि करता है। चारों तरफ कीचड़ और गंदगी हो जाती है, सड़कों पर पानी भर जाता है। बैठने के लिये भी कहीं सूखा स्थान नहीं और आम दिनों में कागज-कार्टून, प्लास्टिक खाकर जो पेट भरते हैं वो भी भीगकर बरसात में खाने योग्य नहीं बचते हैं। घर-घर रोटी के भरोसे थे माँ-बेटा। इतना कुछ खाने को मिलता नहीं जिससे दोनों कमजोर हो गये।

बरसात की ऋतु आयी, खूब बरसात होने लगी। गोमाता और शिवा एक तरफ तो भूखे और ऊपर से बरसात से भीगना और ठण्ड मरना। बहुत कठिन जीवन हो गया। भीगने से बचने के लिये किसी के छज्जे के नीचे या किसी के घर के पास कहीं भी खड़े होते तो लोग डण्डा मारकर भगा देते। कहीं भी माँ-बेटे को सिर छुपाने की जगह नहीं मिलती। अति कमजोर होकर दो-चार दिनों में गोमाता बीच सड़क बैठ गई। ऊपर से बरसात की लगातार हो रही झड़ी से शिवा घबरा गया। बेचारा पास में खड़ा भीगता रहा मगर अपना दु:ख किसे बतावे?

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?
समझेगा कौन यहाँ,
दर्द भरे इस दिल की पुकार,
जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?
परेशानियों का मेला है जी में,
क्या रह गया है इस जिन्दगी में।
उठ रहा है दिल में धुंआ,
जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?
माँ का भी दु:ख है,
अपना भी दु:ख है
अब प्राणों के बचने की उम्मीद कम है,
एक बस्ती सौ तूफान,
जाऊँ तो जाऊँ कहाँ....

हजारों गाड़ियों हॉर्न बजा-बजाकर पास में से गुजरती रही, पर किसी का हृदय पिघला नहीं। सड़क पर पड़ी बीमार गोमाता और रोते हुए बछड़े की किसी ने सुध नहीं ली। इस संसार में अधिकतर लोग निर्दयी हैं, केवल अपने दु:ख से ही दु:खी होते हैं। केवल संत और भक्त ही दूसरे के दु:ख से दु:खी होते हैं। तुलसीदासजी ने संतों की परिभाषा बताई है: पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता। परम पवित्र संत दूसरों के दु:खों से पिघल जाते हैं।

रात्री को दो गोभक्त वहाँ से गुजर रहे थे। सड़क पर गोमाता को देखकर उन्होंने गाड़ी रोकी। बरसात में गाड़ी से उतरकर देखा तो गोमाता बहुत गम्भीर हालत में थी और बछड़े को भी बहुत तेज बुखार था। उन्होंने तुरन्त अपने साथियों को फोन कर गाड़ी लेकर आने के लिये कहा। थोड़ी ही देर में सात-आठ जने गाड़ी लेकर पहुँच गये। सबने मिलकर गोमाता और शिवा को गाड़ी में बैठाया और गाँव के शमशान घाट में संचालित अपनी गोशाला लेकर आये। वहाँ एक शेड में गोमाता और शिवा को उतारा और आग जलाकर तपाया। तुरन्त ही ग्वाला चारा लाया और उनके आगे रख दिया। गोमाता और शिवा बहुत भूखे थे सो चारा पाने लगे। थोड़ी देर में गर्म लापसी बन गई जो लाकर चारे के साथ मिलाकर दोनों को परोसी गई। गोमाता की आत्मा इन गोभक्तों को अमोघ आशीर्वाद दे रही है।

1993 में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना हुई उसके बाद देशभर में वेदलक्षणा गोमाता की सेवा में क्रांतिकारी बदलाव आये और देश के कोने-कोने में लोग छोटी-मोटी हजारों गोशालाओं की स्थापना कर तन-मन-धन से गोसेवा में लग गये। देश में हजारों की संख्या में छोटे-छोटे गोचित्सालय भी संचालित हो रहे हैं। उनके पास भूमि व अन्य मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी है, लेकिन फिर भी गोसेवा के उनके बुलन्द हौसले से वे डटे हुए हैं।

जिस गोशाला में शिवा और उसकी माँ को लेकर गये हैं, यह गाँव के सार्वजनिक शमशान घाट पर स्थित है। कुछ नौजवान ....शेष अगले अंक में

श्री शिव महापुराण कथा में परम् श्रद्धेय गोऋषि जी महाराजश्री का हुआ पदार्पण

पथमेड़ा। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित श्री दिलीप गोसेवाश्रम विरोल में दिनांक 25 से 31 दिसम्बर तक कथावाचक पू. गोभक्त श्री धनेश्वर भाई जोशी, सद्गुरु श्री रायमल धाम अंजार कच्छ भुज की मधुर वाणी में श्री शिव महापुराण कथा सम्पन्न हुई। दिनांक 28 दिसम्बर को दर्शनाष्टमी के पावन अवसर पर परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री का श्री मनोरमा गोलोक ब्रजधाम से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा आगमन हुआ। श्री कामधेनु महाशक्तिपीठ के दर्शन उपरान्त संतों और सैंकड़ों गोभक्तों के संग प.श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री का इस कथा में पदार्पण हुआ। आपश्री के करकमलों से नव निर्मित वेदलक्षणा धनवनतरि गोचिकित्सालय तथा वेदलक्षणा रसोई गृह का गवार्पण हुआ। इस अवसर पर संत पूज्य गोशरण नन्दरामदासजी महाराज, पूज्य श्री बलदेवदासजी महाराज, पूज्य श्री अरूपानंदजी महाराज, पूज्य श्री सीतारामदासजी महाराज गोचिकित्सालय के भामाशाह श्री वरधाजी दौलाजी चौधरी, रसोई गृह के भामाशाह श्री पूनमाराम जी काग, श्री पूरारामजी काग बड़ी विरोल, श्री चंदनसिंह जी विरोल, श्री डूंगरारामजी पुरोहित, देवजी जागरवाल श्री केवलाजी पालड़ी, सीईओ श्री आलोकजी सिंहल, श्री प्रवीणजी पालड़ी, श्री जालमसिंहजी, श्री भवानीसिंहजी, श्री नारणारामजी चौधरी एवं सैंकड़ों गोभक्त उपस्थित रहे।

16 जनवरी को आयोजित होगा सुरभि संसद का अधिवेशन

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री एवं न्यास के कार्यकारी संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज की पावन सन्निधि में दिनांक 16 जनवरी 2026 को दोपहर 1 बजे से श्री मनोरमा गोलोक ब्रजधाम में न्यास के सुरभि संसद का एक दिविसीय अधिवेशन आयोजित होना सुनिश्चित हुआ है। न्यास के समस्त आजीवन सदस्यों को इसमें भाग लेने हेतु व्यक्तिगत पत्र भी भेजे गये हैं। सभी आजीवन न्यासियों से निवेदन है कि इस अधिवेशन में अवश्य उपस्थित हों।

अधिवेशन में केन्द्रीय कार्यकारिणी के नवीनकरण, गत 2 वर्षो के विकास कार्यो की समीक्षा एवं आगामी 2 वर्षो की कार्य योजना के अनुमोदन, वेदलक्षणा गोसंवर्धन परियोजना समिति का गठन, वेदलक्षणा पंचगव्यार्वेद अनुसंधान समिति का गठन, श्री गोगोपाल कॉरिडोर निर्माण समिति का गठन, श्री सुरभि विश्वविद्यालय स्थापना समिति का गठन जैसे कई महत्वपूर्ण निर्णय लेने के प्रस्ताव हैं।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के उद्देश्यानुसार अखिल वेदलक्षणा गोवंश संरक्षण, गोसंपोषण, गोसंवर्धन एवं पंचगव्य विनियोग इन चार चरणों द्वारा वेदलक्षणा गोमाता की सत्ता, महत्ता, उपादेयता एवं गो उत्पादों की विशेषताओं को जन-मन में स्थापित करना है यद्यपि उद्देश्यानुरूप गोमहिमा का प्रचार-प्रसार हो रहा है परंतु क्षेत्र सीमित और गति मंद है।

अतः सभी आजीवन न्यासियों से सादर अनुरोध है कि वेदलक्षणा गोसेवा महाभियान को राष्ट्रव्यापी गति प्रदान करने हेतु निम्न बिन्दुओं पर अपने अमूल्य सुझाव लिखित में भिजवाएं!

(1) परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री के भावानुरूप संपूर्ण गोवंश का संरक्षण कैसे हो? (2) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रत्यक्ष सेवित 72000 से अधिक एवं प्रेरणा से संचालित 84000 से अधिक गोवंश में कुपोषित गोवंश संपोषित कैसे हो एवं प्रतिदिन आवश्यक लगभग 1000 टन सूखा-हरा चारा की गुणवत्तायुक्त न्यूनतम मूल्य पर नियमित आपूर्ति कैसे हो? (3) नस्ल ह्रास वेदलक्षणा गोवंश के तिरस्कार का प्रमुख कारण हैं। भारतीय नस्लों का संवर्धन कैसे हो? (4) गोमाता के वात्सल्य से प्राप्त पंचगव्य में दूध, दही व घी का उपयोग तो पूजा, प्रसाद में प्रारम्भ हुआ है परंतु गोमय के कण-कण का एवं गोमूत्र के बूंद-बूंद का सदुपयोग कैसे हो? (5)वेदलक्षणा गोमहिमा के प्रचार-प्रसार हेतु तत्काल महानगरों, नगरों, कस्बों एवं गांवों तक क्या-क्या उपाय करने चाहिए?

दिनांक 15 जनवरी तक अपने लिखित सुझाव वाट्सऐप नं. 8209930427, 7742093179 एवं ईमेल nyasao@godhampathmeda.org पर भेजें।

23 से 25 जनवरी तक होगी 'वैदिक गोकृषि विज्ञान' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की हार्दिक सदिच्छा है कि गोसेवा के समान ही देश में गो आधारित कृषि का विशाल अभियान प्रारंभ हो। इस प्रकार के अभियान को आगे बढ़ाने के लिए अब तक जिन जिन लोगों ने इस क्षेत्र में पथदर्शी कार्य किया है, वे सब एक मंच पर आकर अपने अनुभवों का आदान प्रदान करें एवं भविष्य की दिशा के लिए चिंतन करें।

इस हेतु एक "वैदिक गोकृषि विज्ञान" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी करने का निर्णय हुआ है। यह संगोष्ठी दिनांक 23 से 25 जनवरी 2026 को तक श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के विशिष्ट प्रकल्प अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य, केसुआ, तहसील-रेवदर, जिला- सिरोही, राजस्थान में आयोजित होगी। आप सभी महानुभावों ने अनेक वर्षो की ज्ञान साधना और तपस्या करके पथदर्शी प्रकल्प खड़े किए हैं। आप से इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में पधारकर अपने अनुभवों को अन्य सहभागियों के साथ साझा करने एवं भविष्य की दिशा तय करने के लिए सहभागी होने का अनुरोध है। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी आप तक शीघ्र पहुंचाने का प्रयास रहेगा। यहाँ पहुँचने के लिये नजदीकी रेल्वे स्टेशन - आबू रोड़ व रानीवाड़ा है।

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा में आयोजित हुआ 'कामधेनु कल्याण महोत्सव'

परम श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री की पावन सन्निधि में दिनांक 1 से 4 दिसम्बर तक गीता एकादशी से दत्त पूर्णिमा पर्यन्त प्रतिवर्ष होने वाले देवालयों के पाटोत्सव व वार्षिक उत्सव का उत्साहपूर्ण आयोजन हुआ। पूज्य संत गोशरण नंदरामदासजी महाराज, पूज्य संत श्री बलदेवदासजी महाराज, पूज्य संत श्री ऋषि जी महाराज के मार्गदर्शन एवं पण्डित ललितजी द्विवेदी धर्माधिकारी के आचार्यत्व में आयोजन समिति- श्री केशारामजी सुथार सिद्धेश्वर, श्री मेघराजजी मोदी मेड़ा जागीर, श्री चोखारामजी सुथार चैन्नई, श्री देवजी डिगारी धोरीमना, श्री केवलाजी पालड़ी, श्री प्रवीणजी पालड़ी, श्रीकस्तुरजी जोशी धमाणा, श्रीनरपतसिंहजी राजपुरोहित जोधपुर, श्री जबराजी पुरोहित पुर ने सेवा दी। उत्सव के दौरान गोमाता और ग्वालबालों को भण्डारा दिया गया तथा मेहमानों के लिये गोव्रती भोजन प्रसादी की व्यवस्था आयोजन समिति की तरफ से रही।

मकर संक्रांति पर दान का महत्व

माघे मासे महादेवरू सर्वपापहरां शुभाम् ।
कुर्यात् स्नानं च दानं च अक्षयं फलदं भवेत्।।

माघ के महीने में (मकर संक्रांति के समय) किया गया स्नान और दान सभी पापों को हरने वाला और शुभ होता है। इस समय किए गए दान का फल **अक्षय** (जिसका कभी क्षय न हो) होता है।मकर संक्रांति पर दान करना हिंदू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण और पुण्यकारी माना जाता है।

इस दिन सूर्यदेव अपने पुत्र शनिदेव से मिलने हेतु उनके घर जाते हैं। इसलिये इस दिन दान करने से सूर्य और शनि दोनों अत्यंत प्रसन्न होते हैं और दिये गये दान को कई गुना करके वापस लौटाते हैं। इस दिन दान करने से कुंडली के ग्रह दोषों, विशेषकर सूर्य और शनि से संबंधित बाधाओं को दूर करने में मदद मिलती है।

इस दिन गोमाता को गोग्रास दान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। संक्रांति पर्व पर काले तिल या तेल, गुड़, अनाज तथा हरे चारे का दान अपने वजन के बराबर तौलकर गोमाता को करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

श्री शिवशक्ति श्याम सेवा मंडल अहमदाबाद के वार्षिक उत्सव का होगा आयोजन

श्री शिवशक्ति श्याम सेवा मंडल अहमदाबाद के वार्षिक उत्सव का 10-11 जनवरी को होगा नंद गाँव में आयोजन। अखंड रामायण जी का पाठ गोभक्त मदनचंदजी लोहारीवाला परिवार के सौजन्य से होगा आयोजन कार्यक्रम।

मकर संक्रांति महादान पर्व पर गोसेवा की अपील

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा सेवित 1,55,000 से अधिक निराश्रित गोमाताओं की सेवा में महान दानपर्व मकर संक्रांति के पावन अवसर पर गोमाता का "मीठा भंडारा" के लिये सुअवसर का लाभ प्राप्त करें।

इस वेब साईट पर जाकर आप गोसेवा हेतु अपनी इच्छानुसार ऑन लाईन राशि समर्पित कर सकते हैं-

Website : www.godhampathmeda.org

इन नम्बरों पर संपर्क भी कर सकते हैं 7742093179, 7073000151, 9760635735

मीठा भण्डारा की राशि

01 गोमाता के लिये -	1111 रु.
11 गोमाता के लिये -	12221 रु.
21 गोमाता के लिये -	23331 रु.
51 गोमाता के लिये -	56661 रु.
101 गोमाता के लिये -	112211 रु.
501 गोमाता के लिये -	556611 रु.
1001 गोमाता के लिये -	112111 रु.

सूरत महानगर में मकर संक्रांति पर किया जायेगा गोग्रास संकलन

परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से सूरत महानगर में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी मकर संक्रांति पर्व पर बड़े स्तर पर गोग्रास संकलन किया जायेगा। इस हेतु दिनांक 21 दिसम्बर को पूज्य महंत श्री रविन्द्रनाथ जी सरस्वती महाराज श्री गोधाम पथमेड़ा के पावन सानिध्य में विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित हुआ।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण''स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला''पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

वेदलक्षणा च्यवनप्राश

(डॉ श्याम सिंह राजपुरोहित आयुर्वेदाचार्य)

भृगु ऋषि के वंश में आगे जाकर च्यवन ऋषि हुए जो महान तपस्वी थे। उन्होंने वर्षों तक कठिन तप किया जिससे उनका शरीर बहुत दुर्बल व कमजोर हो गया, तब उनकी युवा पत्नी सुकन्या ने देवताओं से च्यवन ऋषि की युवावस्था लौटने हेतु प्रार्थना की। देवताओं के आदेश पर वैद्य अश्विनी कुमारों ने च्यवन ऋषि के लिए एक औषधि तैयार की जिसे खाकर च्यवन ऋषि वापस युवावस्था को प्राप्त हो गए। इस औषधि का प्रथम प्रयोग च्यवन ऋषि के द्वारा करने के कारण इसको च्यवनप्राश के नाम से जाना जाने लगा। च्यवनप्राश का सबसे प्रथम वर्णन आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथ चरक संहिता में 1000 वर्ष पूर्व में मिलता है।

च्यवनप्राश को आयुर्वेद की रसायन चिकित्सा की प्रमुख औषधि माना जाता है। वर्तमान में भारत में च्यवनप्राश कई कंपनियों बनाती और बेचती है, लेकिन वैदिक गो उत्पाद फाउंडेशन के द्वारा निर्मित वेदलक्षणा च्यवनप्राश इन सबसे अलग है, क्योंकि इसमें वेदलक्षणा गोमाता का शुद्ध बिलोना घी और संस्था द्वारा उत्पादित शुद्ध जैविक आंवले का उपयोग किया जाता है। वेदलक्षणा च्यवनप्राश साक्षात् ऋषि स्वरूपा गोमाता का आशीर्वाद एवं संतों की तपस्या का प्रतिफल है। यहाँ च्यवनप्राश को वस्तु नहीं मान ठाकुरजी का प्रसाद समझ करके तैयार किया जाता है।

इसमें 50 से अधिक औषधि द्रव्यों का उपयोग किया जाता है जिसमें मुख्य रूप से आंवला, गाय का घी, काले तिल का तेल, शहद, मिश्री, अश्वगंधा, शतावरी, गिलोय, दालचीनी, पिप्पली, द्राक्ष, वंशलोचन, वासा, हरीतकी, कंटकारी, छोटी इलायची, तेज पत्ता, नागकेसर, काली मिर्च आदि का उपयोग किया जाता है। आंवला विटामिन सी का सबसे बड़ा स्रोत है तथा आयरन की प्राप्त मात्रा में पूर्ति करता है।

उपयोग मात्रा : यह प्रतिदिन 10 से 20 ग्राम सुबह भूखे पेट एवं रात को सोते समय गोमाता के दूध के साथ लेना चाहिए।

मुख्य लाभ : च्यवनप्राश शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। यह श्वसन तंत्र की प्रधान औषधि है। इसका उपयोग करने से जुकाम खांसी दमा की बीमारी कम हो जाती है। च्यवनप्राश दीर्घायु और यौवन प्रदान करता है। च्यवनप्राश स्मरण शक्ति, पाचन शक्ति और खून को बढ़ाता है। सर्दियों में वृद्धावस्था में च्यवनप्राश का प्रयोग करने पर बुढ़ापा आराम से निकल जाता है और बच्चों के अंदर इसका उपयोग करने पर बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है और माताओं में इसका प्रयोग करने पर खून की बढ़ोतरी होती है। स्त्री रोगों में फायदा होता है। इसमें कई वाजीकारक औाधियाँ मिलाई जाती है, इसलिये ब्रह्मचारी और साधुओं को कम मात्रा में और आवश्यक हो तो ही सेवन करना चाहिये। विवाहित युवाओं के लिये सर्वाधिक लाभकारी है।

कुल पृष्ठ–36
जनवरी 2026

प्रकाशन तिथी : 01 जनवरी 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास वार्षिक अधिवेशन

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

श्री पथमेड़ा गोधाम

सुरभि संसद

16 जनवरी 2026

पावन सानिध्य
परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराजश्री

मंगलमयी उपस्थिति
गोसेवा प्रेमी पूज्य संतगण

अध्यक्षता
गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज
कार्यकारी प्रधान संरक्षक

निवेदकः
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा
लोक पुण्यार्थ न्यास

आयोजन स्थलः– श्री मनोरमा गोलोक ब्रजधाम अर्बुदारण्य, रेवदर, सिरोही (राज.)

सुरभि संसद में निर्णयात्मक प्रस्ताव

1. केन्द्रीय कार्यकारिणी का नवीनीकरण करना
2. वेदलक्षणा गोसंवर्धन परियोजना समिति गठन करना
3. वेदलक्षणा पंचगव्यायुर्वेद अनुसंधान समिति गठन करना
4. श्री गो–गोपाल कोरीडोर निर्माण समिति गठन करना
5. सुरभि विश्वविद्यालय स्थापना समिति गठन करना

nyasao@godhampathmeda.org
7742093179,9760635735